f=eafr ,Mokal

Ckबा ने साक्षात्कार से जो चार चित्र बनवाये, वे हैं त्रिमूर्ति, सृष्टि–चक्र, कल्पवृक्ष, लक्ष्मी–नारायण एवं सीढ़ी। ये सभी पुराने चित्र 30''X40''(इंच)साइज के हैं। इनमें मुख्य है त्रिमूर्ति का चित्र। यह चित्र ि ावबाबा के डायरैक ान से बने हैं। इसलिए मुरली तारीख 1.1. 75/90, पृ.1 के मध्य में बाबा ने बोला है, ''बाप के डायरैक ान से ही यह चित्र आदि बनाये जाते हैं। बाबा दिव्य दृष्टि से चित्र बनवाते थे। कोई तो फिर अपनी बुद्धि से भी बनवाते रहते हैं।'' इन चित्रों के चित्रण में भी गुह्य अर्थ है, जिसके लिए इसी मुरली में बाबा ने बोला है, ''तुम्हारे यह चित्र सब अर्थ सहित हैं। अर्थ बिगर कोई चित्र नहीं। जब तक तुम किसको समझाओ नहीं तब तक कोई समझ न सके। समझाने वाला समझदार, नालेजफुल एक बाप ही है।'' इन चित्रों में समझाने के लिए लिखत भी दी हुई है। ता. 30.4.71 की मुरली में बाबा ने बोला है, ''अरे, यह तो बाबा ने चित्र बनवाये हैं। तुम चित्रों से लिखत निकाल देते हो तो कोई डेमफूल दिखाई पड़ते हो।''

1. ,Mokal ukyst

अधिकां ा ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ समझते हैं कि ि ावबाबा की मुरलियां तो सीधी–सादी सरल अर्थ वाली हैं। उनमें ऐसा कोई गुह्य अर्थ नहीं है जिसको समझने के लिए विचार–सागर–मंथन करने की आव यकता हो। जबकि बाबा ने मुरलियों में जहाँ एक ओर सामान्य ज्ञान (प्राइमरी नालेज) दिया है वहीं दूसरी ओर उन्हीं मुरलियों में वि ाष्ट ज्ञान (एडवांस नालेज) भी दिया है। इसलिए बाबा ने मु.ता. 11.2.75, पृ.1 के अंत में कहा हैं, ''बेहद का बाप बेहद की बात ही समझाते हैं।'' बेहद की बातों को वही बच्चे समझ सकते हैं जो बाबा के महावाक्यों का मनन–चिंतन–मंथन करते हैं। बाबा मुरलियों में डायरैक ान देते हैं, ''बच्चे, तुम त्रिमूर्ति, लक्ष्मी–नारायण आदि चित्रों के सामने बैठो। रोज अमृतवेले विचार–सागर–मंथन करो तो बुद्धि में बहुत नई–2 प्वाइंट्स आती रहेंगी।'' मु.ता. 22.3.74, पृ.3 के अन्त में बाबा ने कहा है, ''तुमको विचार–सागर–मंथन करने की आदत पड़ती रहेगी तो प्वाइंट्स बहुत आती रहेंगी।''

''अच्छे कर्म जिन्होंने किये होंगे उनकी नि ाानी क्या दिखाई देगी? वह बाबा की मुरलियों के प्वाइंट्स नोट कर मंथन करते रहेंगे।'' बाबा ने ता. 31.8.73 की मुरली में कहा, ''मुरली तुम बच्चों को 5/6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए तब ही बुद्धि में बैठेगी।'' तो मुरलियों और अव्यक्त वाणियों के एक–2 व ान्स पर विचार–सागर–मंथन करने के बाद, चित्रों की लिखत व चित्रण को उनसे टैली करने पर जो सार निकलता है, गुह्य राज़ प्रकट होता है वही एडवांस नालेज या नया ज्ञान है।

2. Jher

त्रिमूर्ति के चित्र में एडवांस नालेज के बतौर पहली मुख्य बात श्रीमत की है। 'श्रीमत' अर्थात् 'श्रेश्ठ बुद्धि'। तो श्रेश्ठ बुद्धि किसकी होगी? जरूर परमात्मा से ज्यादा श्रेश्ठ बुद्धि किसी की भी नहीं हो सकती। वही बुद्धिमानों की बुद्धि है, ज्ञान दाता है। मु.ता. 2.6.73, पृ.3 के मध्य में बाबा ने बोला है, ''श्रीमत है ही एक परमपिता परमात्मा की। बाकी सभी की है आसुरी मत जिससे असुर ही बनते हैं।'' मु.ता. 17.3.68, पृ.1 के आदि में बाबा ने कहा है, ''तुमको तो सिर्फ एक ई वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ावे, सिखावे ओरली पढ़ना है।''

3. Jher nus okys ijekRek dk ifDVdy :Ik dku\

अब प्र न यह उठता है कि परमात्मा का वह प्रैक्टिकल साकार रूप किसका है जिसके द्वारा हमें कदम–2 पर श्रीमत लेनी है, ओरली पढ़ना है; क्योंकि परमात्मा का जो रूप त्रिमूर्ति के चित्र में दिखाया गया है वह अरूप है। जिस ज्योतिर्बिन्दु की तरफ उन तीनों मूर्तियों की स्मृति रूपी लकीरें दिखाई गई हैं वह निराकार हैं। निराकार का कोई चित्र नहीं खींचा जा सकता है। तो जिसका कोई चित्र नहीं, आकार नहीं वह फिर मत भी कैसे देगा? क्योंकि चित्र तो होता ही है साकार का। इसलिए मु.ता. 20.8.78, पृ.1 (अन्त)/6.9.76, पृ.3 आदि में बाबा कहते हैं, ''मैं ज्ञान का सागर हूँ; परंतु मैं निराकार ऊपर बैठ प्रेरणा से कैसे पढ़ाऊँ? ऐसे तो कब पढ़ाई होती नहीं। प्रोफेसर घर में बैठ जाए, प्रेरणा से स्टुडेंट को पढ़ा सकेंगे? जरूर स्कूल में आना पड़ेगा।'' क्योंकि मु.ता. 8.8.76, पृ.3/20.11.88, पृ.1 के अन्त में बोला है, ''प्रेरणा से अगर योग और ज्ञान सिखलाना होता फिर तो बाप कहते हैं मैं इस गन्दी दुनियाँ में आता क्यों? प्रेरणा, आ ीर्वाद यह सब भक्तिमार्ग के अक्षर हैं।'' इसलिए मु.ता. 16.3.75, पृ.3 के आदि में बाबा कहते हैं, ''अभी (संगमयुग पर) मैं सन्मुख हूँ। मैं भी ट्रस्टी बन फिर तुमको ट्रस्टी बनाता हूँ। जो कुछ करो पूछकर करो। मैं तो जीता–जागता हूँ ना। बाबा हर बात में राय देते रहेंगे।'' स्पश्ट है कि निराकार बाप ि ाव जब तक साकार रथ में सन्मुख न हो तब तक वे राय भी कैसे दे सकते हैं? बच्चे उनसे पूछकर कार्य कैसे कर सकेंगे? ओरली कैसे पढ़ेंगे? क्योंकि मु.ता. 30.6. 75, पृ.3 के मध्य में बाबा स्पश्ट रूप से कहते हैं '' ारीर बिगर बाप बात कैसे करेंगे? सुनेंगे कैसे? आत्मा को भारीर है तब सुनती, बोलती है। बाबा कहते हैं मुझे आर्गन्स ही नहीं तो सुनूँ, देखूँ, जानूँ कैसे?'' तो निराकार बाप ि ाव इस साकार सृष्टि पर साकार पुरुश तन से प्रत्यक्ष होते हैं। सन्मुख आकर श्रीमत देते, पढ़ाई पढ़ाते व सद्‌गति का रास्ता बताते हैं। इसलिए बाबा मुरली में कहते हैं ''तुम बच्चों को सिर्फ ि ावजयंती नहीं कहना चाहिए''; क्योंकि जयंती होती है साकार की। जिसका कोई साकार रूप नहीं, आकृति नहीं, उसकी जयंती भी नहीं हो सकती। इसलिए ि ावबाबा कहते हैं मेरी जयंती के साथ तीन मूर्तियाँ जुड़ी हुई हैं। याने जब मेरी प्रत्यक्षता रूपी जयन्ती होती है तो मैं अकेला नहीं आता हूँ बल्कि तीन मूर्तियाँ साथ में होती हैं। वो तीनों मूर्तियाँ चित्र में दिखाई गई हैं। मु.ता. 15.10.95, पृ.3 ,3.10.05पृ.3 के मध्य में बोला है, ''ज्ञान का सागर पतित पावन सर्व का सद्‌गति दाता, त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा ि ाव ही है। ब्रह्मा, विश्णु, ंकर तीनों का जन्म इकट्‌ठा है। सिर्फ ि ाव जयंती नहीं है; परंतु त्रिमूर्ति ि ावजयंती है।''

4. l{eoru dh rhu iqfj;k

त्रिमूर्ति ि ाव की ये तीनों मूर्तियां नम्बरवार स्टेज वाली हैं। इसलिए इनको सूक्ष्मवतन के तीन तबक्कों में भी दिखाया गया है। पहले ब्रह्मापुरी, उससे ऊपर विश्णुपुरी तथा उससे भी ऊपर भांकरपुरी। ये पुरियां ऊपर–नीचे क्यों दिखाई गईं हैं? ये बुद्धि की स्टेज दिखाई गई है। ब्रह्मा से ज्यादा ऊँची स्टेज विश्णु की तथा विश्णु से भी ज्यादा बुद्धि की ऊँची स्टेज भांकर की दिखाई गई है। बुद्धि की यह ऊँची स्टेज चित्रों में कैसे दिखाई जाये? तो इसे द ाानि के लिए तीन पुरियां दिखा दी हैं। वरना तो मुरलियों में बाबा ने सूक्ष्मवतन को कट कर दिया है। कहा है ''सूक्ष्मवतन का तो नाम ही नहीं। वहाँ न सफेद पो ाधारी होते हैं, न जेवरधारी होते, न कोई नाग बलाएं पहनने वाला भांकर आदि होते हैं। बाकी ब्रह्मा और विश्णु का राज बाप समझाते रहते हैं।''(मु.ता. 10.1.76, पृ.3 अन्त)। इसी तरह मु.ता. 12.5.69, पृ.2 के आदि में कहा है, ''हिस्ट्री–जॉग्राफी सूक्ष्मवतन की तो है नहीं। यह सूक्ष्मवतन आदि है भक्तिमार्ग में। ज्ञानमार्ग में कुछ है नहीं। भल तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो, साक्षात्कार करते हो, वहाँ चतुर्भुज देखते हो। चित्रों में (देखा) है ना तो बुद्धि में बैठा हुआ है तो जरूर साक्षात्कार होंगे; परंतु ऐसी कोई चीज है नहीं।'' इसी तरह ता. 22.11.72 की अव्यक्त वाणी में तो स्पश्ट कह दिया है, ''सूक्ष्मवतन यहाँ ही बनना है।'' तो सूक्ष्मवतन कोई ऊपर में नहीं है जहाँ कि साकार भारीर छोड़कर आकारी भारीरधारी आत्माओं का संगठन रहता हो। बल्कि इस साकार सृश्टि पर ही कोई ऐसे वि ोश ब्राह्मण बच्चे हैं जो साकार भारीर में रहते हुये भी अपनी ऐसी आकारी व निराकारी स्टेज बना लेते हैं कि उनके इस आकारी स्टेज के संगठन को सूक्ष्मवतन या एडवांस पार्टी समझ लिया

जाता है। वास्तव में त्रिमूर्ति ि ाव की तीनों मूर्तियाँ इस सृश्टि रूपी रंगमंच पर ही अपना पार्ट बजाती हैं; परंतु बच्चों के आगे नम्बरवार प्रत्यक्ष होती हैं। पहले प्राइमरी नालेज देने वाली ब्रह्मा (बड़ी माँ) की मूर्ति बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होती है और फिर एडवांस नालेज देने वाली बाप, टीचर व सतगुरू की मूर्ति प्रत्यक्ष होती है।

5. f=efr! f’ko dh igyh efr! cgek

प्राइमरी नालेज में त्रिमूर्ति के चित्र पर सिर्फ इतना बताया जाता है कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विश्णु द्वारा पालना व भांकर द्वारा विना ा का कर्तव्य रुहानी बाप ि ाव संगमयुग पर आकर करते हैं; परंतु मुरलियों में बाबा ने डायरैक ान दिया है कि समझाने का यह क्रम रांग है; क्योंकि जिस क्रम से इन मूर्तियों के कर्तव्य हैं उसी क्रम से उनकी बायोग्राफी है। जैसे मु.ता. 9.12.87, पृ.2 मध्य/19.12.89, पृ.1 के आदि में बाबा ने कहा है, ''पहले ऐसा नहीं कहना होता है स्थापना, पालना, विना ा। नहीं, पहले स्थापना, फिर विना ा, बाद में पालना यह राइट अक्षर है।'' इसी तरह मु.ता. 22.1.78, पृ.2 के आदि में बाबा ने बोला है, ''ब्रह्मा द्वारा वाइसलेस वर्ल्ड देवताओं की स्थापना हो रही है। भांकर द्वारा विना ा भी होने वाला है फिर वैश्णों राज्य होगा।'' तो जैसे लौकिक संसार में माँ और बाप ये दो अलग–2 व्यक्तित्व होते हैं वैसे ही ब्राह्मणों के अलौकिक संसार में भी ब्रह्मा के रूप में ज्ञान का बीज धारण करने वाली अर्थात् ज्ञान लेने वाली कृश्ण बच्चे की आत्मा अलग व्यक्तित्व तथा प्रजापिता के रूप में ज्ञान का बीजारोपण करने वाली, ज्ञान देने वाली राम बाप की आत्मा अलग व्यक्तित्व है। ब्राह्मण बच्चों के आगे पहले ब्रह्मा माँ की मूर्ति प्रत्यक्ष होती है; क्योंकि बच्चे पहले–2 माँ को ही पहचानते हैं।

6. cgek dk lk{kkRdkj

यज्ञ के आदि में ब्राह्मण धर्म की स्थापना के लिए ि ावबाबा दादा लेखराज को ब्रह्मा के रूप में निमित्त बनाते हैं। दादा लेखराज की बुद्धि रूपी धरणी में ज्ञान का बीजारोपण होने से पूर्व साक्षात्कारों की हलचल होती है अर्थात् उनके अंदर जिज्ञासा उत्पन्न होती है। सन् 1936/37 में सिन्ध हैदराबाद में ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार हुये– विश्णु चतुर्भुज का, पुरानी दुनियाँ के विना ा का और नई दुनियाँ अर्थात् स्वर्ग का व श्री कृष्ण का; परंतु उन साक्षात्कारों से यह बात साबित नहीं होती कि उस समय दादा लेखराज में ि ावबाबा ने प्रवे ा कर लिया। मु. में बाबा ने बोला है कि साक्षात्कार को प्रवे ा होना नहीं कहा जाता है। साक्षात्कार तो भक्तिमार्ग में भी अनेकों भक्तों को हुए। तो क्या यह मान लिया जाय कि उनमें परमात्मा ि ाव ने प्रवे ा कर लिया? नहीं। इसलिए मु.ता. 6.6.73 और 4.8.83, पृ.3 मध्य/3.7.99, पृ.3 के अन्त में बोला है, ''बाबा को तो विना ा और स्थापना का साक्षात्कार हुआ। इनको भविश्य का साक्षात्कार एक्यूरेट हुआ; परंतु पहले यह समझ में नहीं आया कि हम यह विश्णु बनेंगे।'' तो यह राज़ जरूर किसी ने उनको समझाया होगा। बाबा ने पहले अपने लौकिक गुरू से पूछा; लेकिन उसने अनभिज्ञता जताई। तब बाबा की गुरू से भी श्रद्धा हट गई। बाबा वाराणसी गए। वहाँ के विद्वान, पंडित, आचार्यों आदि से पूछा; लेकिन सन्तुश्टि नहीं हुई। बाबा को साक्षात्कारों का रहस्य जानने की इतनी तीव्र उत्कण्ठा हो गई कि अंत में वे कलकत्ता चले गये।

7. nljh efr! i!tkfirk ¼jke cki½

पूर्वी बंगाल, कलकत्ता में ड्रामा प्लेनानुसार रुहानी बाप ि ाव का वह मुकर्रर रथ मौजूद था जिसके द्वारा दादा लेखराज को उनके साक्षात्कारों का रहस्य ज्ञात हुआ। अ.वा.ता. 1.2.79, पृ.259 के आदि में यह बात आई है,''साकार तन को ढूढा भी यहाॅ से ही है। (बंगाल जोन से। यह नहीं कहा सिंध हैदराबाद से)।'' कलकत्ता में बाबा की हीरे–जवाहरातों की दुकान थी। दुकान को उनका भागीदार चलाता था। भागीदार पहले दुकान में नौकर था। बाद में उसकी योग्यता, बुद्धिमत्ता व इमानदारी से प्रभावित होकर बाबा ने उसे अपना पार्टनर बना लिया। मेहनत उसकी, धन बाबा का और इन्कम में आधा–2। बाबा अपने जीवन में सबसे अधिक मान्यता उस भागीदार को देते थे। उसी से अपने साक्षात्कारों का रहस्य जानने के लिए बाबा

कलकत्ता पहुँचे; लेकिन ड्रामाप्लैन अनुसार वे डायरैक्ट भागीदार को अपने साक्षात्कार नहीं सुना सके। बल्कि बीच में कोई नजदीकी सम्बन्ध की माता निमित्त बन गई; क्योंकि दादा लेखराज तो कृष्ण बच्चे की आत्मा है। बच्चा कभी डायरैक्ट बाप से पैदा नहीं हो सकता। बीच में माता जरूर होती है। माता गुरू बिगर कभी उद्धार नहीं हो सकता। इसलिए ब्रहमा बाबा ने भी पहले उस माता को ही अपने साक्षात्कार सुनाये। बाद में माता ने जब भागीदार को उक्त साक्षात्कार सुनाने चाहे तो उस समय माता में रुहानी बाप ि ाव ने प्रवे ा कर लिया तथा उसके मुख से भागीदार को साक्षात्कारों का ◦µÖÖë ⊔úÖ Ÿµ̃ÖÖë हाल सुना दिया ,जैसा कि दादा लेखराज ने उस माता को सुनाया था। तरह ि ाव बाप की सर्वप्रथम प्रवे ाता के कारण वह माता ही वास्तव में ब्रह्मा (बड़ी माँ) अर्थात् जगदम्बा साबित होती है। उस जगत माता को ज्ञान का सूक्ष्म जन्म देने वाली साकार में कोई माता नहीं होती। अब उस बड़ी माँ ब्रह्मा अर्थात् गऊ मुख से रुहानी बाप ि ाव की वाणी को सुनने वाला पहला–2 मुखवं ावली ब्राह्मण हो गया भागीदार। इसलिए बाबा ने मुरलियों में बोला है, ''ब्राह्मण बने बिगर प्रजापिता था क्या?'' m''मुखवं ावली नहीं तो वो प्रजापिता कैसे होगा?'' तो यज्ञ के आदि में साक्षात्कारों को सुनने और सुनाने का भक्तिमार्ग का फाउंडे ान रुहानी बाप ि ाव ने आदि ब्रह्मा अर्थात् जगत माता या गीता माता के द्वारा डाल दिया।

फिर आती है समझने और समझाने की ज्ञानमार्ग की बात। तो परमात्मा ि ाव ने ब्रह्मा (बड़ी माँ) के द्वारा जब भागीदार को सुनाया तो उसी समय फिर भागीदार में भी (ि ाव) प्रवे ा करके उनके मुख से साक्षात्कारों का रहस्य बड़ी माँ अर्थात् गीता माता को समझा दिया; क्योंकि समझ को ही ज्ञान कहा जाता है और ज्ञान का बीज बोने वाला ही रचयिता बाप होता है। तो वह भागीदार जिसके द्वारा ि ाव बाप ने ज्ञान दिया वही सम्पूर्ण मनुश्य सृष्टि का प्रजापिता ठहरा। उस प्रजापिता को भी कोई साकार मनुश्य ज्ञान का जन्म नहीं दे सकता। वही सम्पूर्ण मनुश्य सृष्टि का रचयिता साबित होता है। उस रचयिता बाप की फर्स्ट रचना है आदि ब्रह्मा अर्थात् गीता माता। बाद में उस गीता माता के द्वारा टाइटिलधारी ब्रह्मा याने दादा लेखराज को उनके साक्षात्कारों का रहस्य ज्ञात हुआ और उन्हें यह नि चय बैठा कि आने वाली सतयुगी सृष्टि में वे कृष्ण बच्चे के रूप में जन्म लेंगे। तो यह हो गई सृष्टि के रचयिता बाप प्रजापिता और आदि रचना जगदम्बा (बन्नी) तथा फर्स्ट क्लास रचना कृश्ण(बच्चे) की क्रमवार प्रत्यक्षता। दिनांक 14.12.93 और 13.12.88, पृ.1 के अंत की मु. में बाबा ने इसका स्पश्ट संकेत दिया है, ''गीता माता रची ि ावबाबा ने। जन्म लिया कृष्ण ने। उनके साथ राधे और सब आ जाते हैं।'' इसी मुरली में पृ.2 के मध्य में कहा है, ''बाप ने गीता माता द्वारा कृष्ण को जन्म दिया, उन्होंने फिर कृष्ण को गीता का स्वामी बना दिया है। गीता का स्वामी तो ि ाव है, उसने गीता से कृष्ण को जन्म दिया।'' इसी तरह यज्ञ के आदि में यज्ञ की स्थापना के निमित्त जो आत्माएं बनीं उनका मु.ता. 3.5.72, पृ.1 के अन्त में बाबा ने परिचय दिया, ''पहले–2 जिस द्वारा रचना रचते हैं उनको कहा जाता है प्रजापिता ब्रहमा। वह है ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर।'' तो यह प्रजापिता का पार्टधारी (भागीदार) वास्तव में किसकी आत्मा है इसका भी परिचय बाबा ने ता. 6.2.76, पृ.1 के मध्य की मु. में दिया है, ''प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है उनको ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर कहा जाता है।'' तो यज्ञ के आदि में प्रजापिता/राम बाप के द्वारा ि ाव पिता ने दादा लेखराज (ब्रह्मा) के साक्षात्कारों का रहस्य खोला। इसलिए मु.ता. 6.9.70, पृ.3 के मध्य में बोला है, ''राम कहा जाता है बाप को।'' मुरलियों में यह कभी नहीं कहा कि बाप कृष्ण को कहा जाता है। सदा यही कहा कि ''कृष्ण तो बच्चा (बुद्धि) है।'' मु.ता. 10.2.75, पृ.1 के आदि में बोला है, ''बाप जिसको भारतवासी राम भी कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति न जानने के कारण राम त्रेता वाला समझ लेते हैं। वास्तव में उनकी तो बात ही नहीं (संगम की बात है)।'' m''स्वर्ग का वर्सा बाप ही आकर देते हैं। पुकारते भी उनको हैं हे राम! हे भगवान! मरने समय भी उनको याद करते हैं।''(मु.ता. 29.1.75, पृ.3 आदि)। m''सर्व ाक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं।''(मु.ता. 20.2.74, पृ.3 आदि)

8. jke Qy

राम और कृष्ण की आत्माएं इस सृष्टि रूपी रंगमंच के मुख्य पार्टधारी हैं। इनका जन्म–2 का व युगों–2 का साथ है। कलियुग के अंत में भी कृष्ण की आत्मा दादा लेखराज के रूप में पार्ट बजाती है तो राम की आत्मा भी भागीदार के रूप में उसके साथ होती है। मु.ता. 25.7.67, पृ.2 के अन्त में बाबा ने स्पश्ट भी किया है, ''10 वर्श से (साथ में) रहने वाले ध्यान में जाय मम्मा–बाबा को भी ड्रिल कराते थे। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवे ा कर डायरैक ान देते थे। कितना मर्तबा था। मम्मा बाबा भी उनसे सीखते थे। आज वह भी हैं नहीं। उस समय यह इतना ज्ञान नहीं था।'' इस मुरली से साबित होता है कि दादा लेखराज के साथ 10 वर्श से रहने वाला उनका भागीदार याने राम वाली आत्मा और कोई यज्ञमाता (सीता वाली आत्मा) भी थी जो ध्यान में जाती थी। उन दोनों में ही ि ावबाबा प्रवे ा कर डायरैक ान देते थे। उनका ज्ञान यज्ञ में बड़ा मर्तबा था। बाद में वे यज्ञ से चले गये; क्योंकि उस समय इतना ज्ञान नहीं था। अब प्र न यह उठता है कि ज्ञान पूरा न होने के कारण राम–सीता वाली आत्माएं ही क्यों फेल हो गईं? ब्रह्मा बाबा क्यों नहीं? तो उसका कारण यह है कि ब्रह्मा बाबा के द्वारा रुहानी बाप ि ाव को पहले–2 ब्राह्मण धर्म की स्थापना के लिए स्नेह व ममता की मूर्ति माँ का लवफुल पार्ट बजाना था सो उनको साक्षात्कार कराये। फिर राम (प्रजापिता) के द्वारा रचयिता बाप का लॉफुल सख्त पार्ट बजाना है तो उनमें पहले–2 प्रवे ा कर ज्ञान का गुप्त बीजारोपण किया। ब्रह्मा बाबा को उनके साक्षात्कारों का स्पश्टीकरण मिल गया तो वे दृढ़ नि चयवान हो गए। साक्षात्कारों का प्रैक्टिकल अनुभव होने के कारण उनकी पक्की भावना बैठ गई। वैसे भी माँ होती है भावनावादी, जबकि बाप होता है बुद्धिवादी। ब्रह्मा बाबा को तो पहले साक्षात्कार हुये और बाद में उनका अर्थ भी स्पश्ट हो गया। तो उनको पक्का नि चय हो गया। जबकि राम वाली आत्मा (भागीदार) को तो साक्षात्कार हुए नहीं थे। उनके द्वारा तो रुहानी बाप ि ाव ने ब्रह्मा के साक्षात्कारों का रहस्य खोला। सो वो आत्मा बुद्धिप्रधान होने के कारण दृढ़ नि चयवान नहीं रह सकी। बुद्धिवादी आत्माओं को विचार–सागर–मंथन के लिए जब तक पूरा ज्ञान नहीं मिल जाता, जब तक आत्मा को अपने पार्ट का, अपने स्वरूप का ज्ञान न हो जाये, तब तक वह नि चय–अनि चय के चक्र में आती जरूर है। यज्ञ के आदि में रुहानी बाप ि ाव ने सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का पूरा ज्ञान तो दिया नहीं था। इसलिए राम–सीता वाली आत्माएं किसी बात को लेकर सं ाय बुद्धि हो गईं। यज्ञ में कुछ ऐसा घटना चक्र बना कि यज्ञ स्थापित होते ही उसमें विघ्न पड़ गया। अ.वा.ता. 3.2.74, पृ.13 के मध्य में इसका संकेत दिया है, ''विना ा ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या भांकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब से स्थापना के कार्य अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ–2 यज्ञ कुण्ड से विना ा की ज्वाला भी प्रकट हुई। तो विना ा को प्रज्वलित करने वाले कौन हुये? बाप और आप साथ–2 हैं न। तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि भांकर को।'' आदि में ही यज्ञ के अंदर दो प्रकार के ब्राह्मण उत्पन्न हो गये। एक वि वामित्र, व ि ाश्ठ जैसे दैवी संस्कारों वाले ब्राह्मण तथा दूसरे रावण, कुम्भकर्ण जैसे आसुरी स्वभाव, संस्कारों वाले विधर्मी और विदे ीयता से प्रभावित ब्राह्मण। बुद्धिवादी राम बाप ने तो उन विपरीत बुद्धि ब्राह्मणों का सामना किया; लेकिन भावनावादी ब्रह्मा माँ ने उनका साथ दिया। तो माता–पिता के बीच में मतभेद हो गया। बाप ने यज्ञ की जिम्मेवारी छोड़ दी। वो फेल हो गया। ता. 31.8.74 की मु. में बोला है ''राम भी अपने पूर्वजन्म (सन् 1937 से 1942 के बीच) में राजयोग सीखता था। सीखते–2 फेल हो गया। इसलिए क्षत्रिय नाम पड़ा।''

9. Ckkgek e: f'ko dh iko'krk

राम–सीता वाली आत्माओं के द्वारा रुहानी बाप ि ाव ने यज्ञ की स्थापना कर दी व उनके द्वारा कुछ समय तक यज्ञ का संचालन भी किया। अनेकों मुरलियों में बाबा ने उन आदि वाले फर्स्ट क्लास बच्चों (राम–सीता) का जिक्र किया है, ''अच्छे–2 फर्स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले जिनके डायरैक ान पर माँ–बाप भी पार्ट बजाते थे। आज वह हैं नहीं। क्या हुआ? कोई बात में सं ाय आ गया।''(मु.ता. 8.7.78, पृ.1/27.6.93, पृ.2 अन्त)। m''मम्मा–बाबा को भी ड्रिल

सिखलाते थे। डायरैक ान देती थी ऐसे–2 करो। टीचर हो बैठती थी। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेगी। वह भी गुम हो गये। यह सब समझना पड़े न। हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है।'' (मु.ता. 28.5.74, पृ.2 अन्त/4.5.94, पृ.3 आदि)। m''अच्छे–2 बच्चे 5–10 वर्श रह अच्छे–2 पार्ट बजाते है। फिर हार खा लेते हैं।'' (मु.ता. 8.7.78, पृ.1/27.6.93, पृ.2 अन्त)

उन आत्माओं अर्थात् यज्ञमाता और यज्ञपिता के यज्ञ छोड़ने के प चात दादा लेखराज भी सिन्ध हैदराबाद से कराची चले गये। उस समय हिन्दुस्तान–पाकिस्तान के बंटवारे की स्थिति से चारों ओर खून–खराबा व अफरा–तफरी का माहौल था। इसका लाभ उठाकर सिन्ध हैदराबाद से सभी बांधेली गोपियां व गोप भागकर दादा लेखराज के पीछे कराची पहुँच गए। जब सन् 47/48 तक कराची में सारा संगठन इकट्ठा हो गया तब दादा लेखराज में रुहानी बाप ि ाव की प्रवे ाता हुई और तब उनका नाम 'ब्रह्मा' पड़ा। ता.12.10.74/18.9.04, पृ.2 (मध्य) की मु. में बोला भी है ''ब्रह्मा तो कहते ही तब हैं जब बाप इनमें प्रवे ा करे।'' पहले सिन्ध हैदराबाद में ब्रह्मा बाबा मुरली नहीं चलाते थे। रात को 2 बजे उठकर लिखते थे तथा बाप लिखाते थे। इसका मतलब लिखाने वाला भी सिन्ध में साकार में मौजूद था। मु.ता. 26.5. 78, पृ.1 मध्य/3.6.01, पृ.1 अंत में बोला है, ''कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली नहीं चलाते थे। रात को दो बजे उठकर 10/15 पेज लिखते थे। बाप लिखवाते थे। फिर उसकी कॉपियां निकालते थे।'' मुरली से ही साबित होता है कि पहले सिंध में दादा लेखराज में ि ावबाबा की प्रवे ाता नहीं होती थी। प्रवे ाता कब से हुई? प्रवे ाता की नि ाानी क्या है? तो उसका जवाब भी मु.ता. 27.10.74, पृ.2 मध्य/26.10.99, पृ.2 अन्त में दिया है, ''मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब नालेज देते हैं।'' तो सन् 1948 से दादा लेखराज में ि ावबाबा की प्रवे ाता सिद्ध होती है। उस समय दादा लेखराज की लौकिक आयु 60 वर्श होनी चाहिए; क्योंकि वानप्रस्थ अवस्था में ही बाप प्रवे ा करते हैं।

10. VkbfVy/kkjh cgek }kjk fl Q ek¡ dk ikV

राम वाली आत्मा के द्वारा आदि में केवल ज्ञान का बीजारोपण करने वाले रचयिता बाप का पार्ट सम्पन्न हुआ। अब बच्चों को जन्म देना, उनकी पालना करना तथा उनको प्राइमरी नालेज देना यह सारा कार्य माँ का होता है। तो कृष्ण की आत्मा को ब्रह्मा के रूप में निमित्त बना करके परमात्मा ि ाव ने उनके तन से माँ का लवफुल करनहार का पार्ट बजाया। ब्रह्मा बाबा के समय का एक भी ब्राह्मण ऐसा नहीं जो यह कह सके कि हमको ब्रह्मा बाबा से प्यार नहीं मिला। ब्रह्मा बाबा के तन से तो परमात्मा ि ाव पार्ट बजा रहे थे और परमात्मा से ज्यादा अच्छा माता का पार्ट कौन बजायेगा? मु.ता. 1.5.73, पृ.2 के आदि में बोला है, ''तुम्हारी बड़ी मम्मी ब्रह्मा है; परंतु कई बच्चों ने पूरा नहीं पहचाना हैं। अभी अजुन पहचानते रहते हैं।'' m''असुल रियल्टी में यह (ब्रह्मा) माता है; परंतु पुरुश तन है तो माताओं की चार्ज में इनको कैसे रखा जाए (क्योंकि दाढ़ी–मूंछ वाले को माता नहीं कहा जाता) इसलिए फिर जगत अम्बा निमित्त बनी हुई है।''(मु.ता. 18.5.78, पृ.2 मध्य)। m''बेहद के भी दो बाप हैं। (ि ाव–प्रजापिता) तो माँ भी जरूर दो होगी– एक जगदम्बा माँ दूसरी यह (ब्रह्मा) भी माता ठहरी।''(मु.ता. 3.2.78 एवं 8.2.78, पृ.1 के आदि)। m''कहते हैं तुम मात–पिता... तो माता यह सिद्ध हुई। दो बाप इसमें प्रवे ा हो रचते हैं तो यह बूढ़ा प्रजापिता भी ठहरा। फिर माता भी बूढ़ी ठहरी। बूढ़ी ही चाहिए ना।''(मु.ता. 4.1.73, पृ.1 मध्य)।

तो ब्रह्मा के द्वारा तो सिर्फ माँ का पार्ट चला। ब्रह्मा–सरस्वती ने तो अपने अलौकिक माता–पिता प्रजापिता व गीता माता के द्वारा स्थापित ज्ञान यज्ञ की सम्भाल की। ब्रह्मा के द्वारा ि ावबाबा ने ब्राह्मण बच्चों को यह लक्ष्य दिया कि 'पवित्रता और सहन ीलता का जो गुण ब्रह्मा बाबा ने अपने जीवन में धारण किया वही गुण बच्चों को भी धारण करने हैं।' ब्रह्मा बाबा गुणग्राही थे; क्योंकि त्रिमूर्ति चित्र के अनुसार उनका था राइट हैंड का राइटियस पार्ट। उन्होंने कभी भी बच्चों के अवगुणों को नहीं देखा; परंतु यज्ञ में आसुरी स्वभाव, संस्कारों वाले बच्चों की संख्या ज्यादा होती गई। उन्होंने ब्रह्मा माँ के प्यार की वैल्यु नहीं समझी। उन आसुरी ब्राह्मणों के विपरीत आचरण से ब्रह्मा माँ का दिल टूट गया। उनका हार्टफेल हुआ। (देखिये बुलेटिन न.

1)। जब ब्रह्मा माँ का हार्टफेल हुआ तो निश्चित है कि परमात्मा शिव को कोई कठोर स्वभाव वाला, लॉफुल पार्ट बजाने वाला तन धारण करना पड़े। कहावत भी है 'जो काम प्यार से असम्भव हो जाता है वह मार से जरूर सम्भव हो जाता है' और ऐसा ही हुआ। ब्रह्मा बाबा अपने जीवनकाल में 'रामराज्य आयेगा' का भाुभ संकल्प चलाते रहे। उनक जीवित रहते रामराज्य तो नहीं आया; लेकिन रामराज्य की स्थापना करने वाला राम उनके भारीर छोड़ते ही ज्ञान यज्ञ में जरूर आ गया।

11. ^lkt kfirk^ QLV! lk ykLV e! ^'kadj^

तो जैसा कि पूर्वनिश्चित है जो कार्य राइट हैंड ब्रह्मा के लवफुल पार्ट के द्वारा सम्पन्न नहीं हुआ वो कार्य फिर त्रिमूर्ति चित्र के अनुसार लेफ्ट हैंड (लॉफुल कठोर पार्ट) भांकर के द्वारा कराना पड़े। अ.वा. 14.2.78, पृ.2 के आदि में संकेत भी दिया है, ''करनकरावनहार है तो करनहार का भी पार्ट बजाया (पास्ट में ब्रह्मा द्वारा) और अभी करावनहार का भी पार्ट बजा रहे हैं (प्रेजेंट में धर्मराज भांकर द्वारा)।'' मुरलियों में बाबा ने कहा ''राम फेल हो गया।'' यह नहीं कहा कि राम फेल हो जावेगा ;क्योंकि फाइनल परीक्षा तो अभी होनी है। इसलिए मु.ता. 9. 8.74, पृ.1/16.7.89, पृ.1 के मध्य में बोला है, ''बाप समझाते हैं ऐसे नहीं कहेंगे रामचन्द्र फेल हुआ। नहीं, (यज्ञ के आदि में) कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर रामचन्द्र बनते हैं। राम व सीता त्रेता में थोड़े ही पढ़ते हैं जो फेल हुए। यह भी समझ की बात है न। कोई सुने रामचन्द्र फेल हुआ तो कहेंगे कहाँ पढ़ते थे? आगे (पूर्व) जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया हैं।'' तो यज्ञ के आदि वाला वही राम बाप जिसने यज्ञ के आदि में भी आसुरी बच्चों को अपने रौद्र रूप की एक झलक दिखा दी थी। पुनः महादेव भांकर के रूप में ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ में विश्व की बादशाही का वर्सा देने तथा आसुरी ब्राह्मणों के पद का विनाश करने के लिए प्रत्यक्ष हो जाता है। बाबा ने अनेकों मुरलियों में भांकर के अस्तित्व के बारे में स्पशट किया है। बाबा ने बोला भी है कि ''भांकर का इतना पार्ट वास्तव में है नहीं। विनाश तो होना ही है। बाप विनाश उनसे कराते हैं जिस पर कोई पाप न लगे। अगर कहेंगे भगवान विनाश करता है तो उन पर दोश आ जाए।''(मु.ता. 30.4.75पृ.1आदि)

- ''शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। जरूर भांकर भी है तब तो साक्षात्कार होता है।'' -मु.ता. 26.2.73/76, पृ.1 अन्त
- ''शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है; लेकिन भाक्तियां ही संहार का पार्ट बजाती हैं, भांकर को नहीं बजाना है। भाक्तियों को ही संहारी रूप धारण करना है जिससे संहार करना है।'' -अ.वा. 9.10.71, पृ.194 अंत
- ''ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब भांकर कौन हुआ? यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विशणु है तो भांकर कौन? इस पर भी रूह–रुहान करना।'' -अ.वा.1.1.79, पृ.166 आदि
- ''जो–2 मैंने काम किये हैं वह नाम रख दिये हैं। कहते हैं हर–हर महादेव। सभी के दुःख काटने (हरने) वाला। वह भी मैं ही हूँ, भांकर नहीं हैं। भांकर भी मेरी प्रेरणा से सर्विस पर हाजिर है, ब्रह्मा भी सर्विस पर हाजिर है।''-मु.ता. 4.11.73, पृ.2 मध्य
- ''विशणु को, शंकर को भी देह का अहंकार हो सकता है।''-मु.ता.17.4.72, पृ.1मध्य
- ''शंकर न होता तो हमको (त्रिनेत्री शिव और ब्रह्मा ज्ञान चन्द्रमा को) भांकर के साथ मिलाते भी नहीं। चित्र बनाया है तो मुझे भांकर के साथ मिला दिया है। शिव–शंकर महादेव कह देते तो महादेव बड़ा हो जाता है।''-मु.ता. 5.7.85, पृ.2 अन्त, 26.6.76 एवं 16.2.73
- ''शंकर भी देवता है। उन्होंने फिर शिव–शंकर इकट्ठा कर दिया है। अब बाप कहते हैं हमने इनमें प्रवेश किया है तो तुम कहते हो बापदादा। वह फिर कहते हैं शिव–शंकर। भांकर–शिव नहीं कहेंगे, शिव–शंकर कहते हैं।''

-मु.ता. 11.2.75/25.2.00, पृ.2 आदि

● ''बाप बहुत मोहजीत है। कितने ढेर बच्चे हैं जो कामचिता पर जल मरे हैं। परमपिता परमात्मा आते ही हैं भांकर द्वारा पुरानी दुनियाँ का विना ा कराने के लिए। तो मोह कैसे होगा?''
-मु.ता. 1.5.71, पृ.1 मध्य

● ''उनकी आत्मा का ही नाम ि ाव है। यह सारी दुनियाँ जानती है। बाकी इतने सब नाम भारीरों पर रखे जाते हैं। ि ावबाबा को तो ि ाव ही कहते हैं। बस उनका कोई भारीर नहीं दिखाई पड़ता। भांकर का नाम भी भारीर पर पड़ा है। उसमें भी आत्मा है; परंतु भारीर के नाम धरे हुए हैं विश्णु, भांकर। ऐसे थोड़े ही कहेंगे 'आत्मा इधर आओ।''
-मु.ता. 23.3.76, पृ.1

● ''बहुत मनुश्य पूछते हैं भांकर का क्या पार्ट है? प्रेरणा से कैसे विना ा कराते हैं? बोलो यह तो गाया हुआ है। चित्र भी है। तो इस पर समझाया जाता है। वास्तव में तुम्हारा कोई इन बातों से कनेक ान ही नहीं।'' -मु.ता. 23.3.78 पृ.3 आदि

● '' ांकर के लिए कहते हैं ना एक सेकेंड में आँख खोली और विना ा। यह संघारीमूर्त के कर्तव्य की नि ाानी है।'' -मु.ता. 4.11.76, पृ. 1 अन्त

●''वास्तव में ि ाव का तो बहुत पार्ट है। पढ़ाते हैं। भांकर क्या करते हैं। उनका पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो तुम वि वास कर न सको।''ता.14.5.70व15.5.75

● ''बाप ने समझाया है भांकर का इतना पार्ट नहीं हैं। वह नेक्स्ट टू ि ाव है।''
-मु.ता. 8.3.76, पृ.2 मध्य

ब्रह्मा–सरस्वती ने भारीर छोड़ दिया तो इसका यह अर्थ नहीं कि परमात्मा ि ाव भी परमधाम चले गए। उनका तो वायदा है कि स्वर्ग स्थापन करके, बच्चों को साथ लेकर के ही वापस जाऊँगा। तो बीच में ही वायदा तोड़कर कैसे जा सकते हैं? परमात्मा को तो इसी पतित दुनियाँ में, पतित भारीर में रहकर पतितों को पावन बनाने का दिव्य कर्तव्य सम्पन्न करना है। तो ब्रह्मा–सरस्वती के भारीर छोड़ते ही वही आदि वाले मात–पिता पुनर्जन्म के प चात फिर यज्ञ में वापस आ जाते हैं। उनमें से राम वाली आत्मा के इस दुबारा मिले ब्राह्मण तन में रुहानी बाप ि ाव गुप्त रूप से प्रवे ा कर जाते हैं और सन् 76 से ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ के बीच में भांकर के नाम–रूप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

12. jke dk /kuq"k&ck.k

राम–सीता की आत्माएं अपने इस अंतिम ब्राह्मण जीवन में महाकाल और महाकाली रूपी भांकर–पार्वती का लॉफुल पार्ट बजाती हैं। उनमें राम की आत्मा की जो वि ोशता है वह बाबा ने बताई, ''रामचन्द्र ने जीत नहीं पाई, उनको क्षत्रिय की नि ाानी दी है। तुम सब क्षत्रिय हो ना जो माया पर जीत पाते हो। कम मार्क्स से पास होने वाले को चन्द्रवं ाी कहा जाता। इसलिए राम को बाण आदि दे दिये हैं। हिंसा तो त्रेता में भी होती नहीं।''(मु.ता. 23.7.74, पृ.3 मध्य)। तो रामचन्द्र को बाण कहाँ के लिए मिले? और कौन से बाण मिले? क्या यह कोई वर्सा है? हाँ, वर्सा है। बाबा ने कहा है ''महाभारी महाभारत युद्ध से हर आत्मा को अव य गुजरना पड़ता है। बगैर युद्ध किये राजाई मिल नहीं सकती।'' यहाँ हमारी है फिर माया–रावण से युद्ध। जिसके लिए ज्ञान के बाण, ज्ञान की तलवार चाहिए। तो वो ज्ञान बाण राम को दिखाये गए हैं। ये ज्ञान बाण बुद्धि रूपी तरकस में भरे जाते हैं। धनुश कहा जाता है उस पुरुशार्थी भारीर को जिससे पुरुशार्थ में लचीलापन अर्थात् मोल्डिंग पावर आती है जो पुरुशार्थ को तेज गति प्रदान करता है। राम और राम सम्प्रदाय की आत्माओं को पूर्वजन्म की प्रारब्ध से इस दूसरे ब्राह्मण जन्म में स्वतः ही ज्ञान के बाण और पुरुशार्थ की कमान मिल जाती है।

13. ,dy0;

राम और राम सम्प्रदाय की आत्माएं पुनर्जन्म के बाद जब पुनः ब्राह्मण बनकर यज्ञ में आती हैं तो यज्ञ के भण्डारे से उन्हें किसी प्रकार का अन्दरूनी सहयोग पुरुशार्थ के लिए नहीं

मिलता। उल्टे उनका विरोध ही किया जाता है; लेकिन पूर्वजन्म की ज्ञान की प्रारब्ध के फलस्वरूप वे आत्माएं स्वयं ही इतनी पुरुशार्थी होती हैं कि उन्हें किसी के सहयोग की चाह भी नहीं होती। वे एक ि ाव पिता से प्राप्त तीर–कमान रूपी ज्ञान वर्से के आधार पर सबसे आगे निकल जाते हैं। बाबा ने मु.ता. 3.8.74, पृ.3 के आदि में बोला भी है, ''भील अर्जुन से तीखा हो गया। बाहर में रहने वाले ने (ज्ञान) तीर पूरा चट कर लिया।''

14. l|nkek d pkoy

तो 'भील' अर्थात् ' ंकर' पूर्वजन्म में प्रजापिता के रूप में ज्ञान का बीजारोपण करने के प चात जब दुबारा जन्म लेते हैं तो उनका लौकिक जन्म ऐसे गाँव में होता है जहाँ बाबा की मुरली के अनुसार लोगों को खाने के लिए रोटी भी पर्याप्त नहीं होती। बाबा ने ता. 20.1.74 की मुरली में बोला है,''जब तक फुल बैगर नहीं बने तब तक फुल प्रिंस नहीं बन सकते। तुम सुदामा हो। देते क्या हो? चावल मुट्ठी। लेते क्या हो? वि व की बाद ाही।'' तो चावल मुट्ठी से मतलब कोई स्थूल चावल नहीं, बल्कि ऐसी सात्विक आत्माओं का समूह जिनका देहभान रूपी छिलका पूर्णतः उतार दिया गया हो। दो मुट्ठी माना राइट हैंड में विजयमाला के 108 मणके और लेफ्ट हैंड में रूद्रमाला के 108 मणके। ऐसे दोनों प्रकार के संगठन तैयार करके वो राम बाप परमपिता परमात्मा के कार्य में अर्पण कर देता है। तो सन् 76 से माला का संगठन बनाने और श्रेश्ठ वारिसदार आत्माओं की छंटनी का कार्य उस बाप के द्वारा आरम्भ होता है।

15. ykLV lk QkLV

मु.ता. 16.12.74/16.9.70, पृ.3 आदि/4.9.99, पृ.3 के मध्य में बाबा ने बोला हैं, ''लास्ट सो फर्स्ट। फर्स्ट सो लास्ट।'' फिर ता. 31.5.75/2.8.86, पृ.3 (अंत) की मुरली में बोला है,''देरी से आने वाले भी आगे जा सकते हैं। ...क्योंकि अच्छी–2 प्वाइंट्स तैयार माल मिलता है।'' बाबा के इन महावाक्यों का ब्राह्मण उल्टा अर्थ लगा लेते हैं। यूं ही नए–2 आने वाले जिज्ञासुओं को खु ा करने के लिए उनसे कहा जाता है 'भाई आप तो लास्ट में आए हैं। आपको तो सब बना बनाया तैयार माल मिलता है। सो आप ही फास्ट जा सकते हैं; लेकिन सोचने की बात यह है कि यहाँ तो लाखों की संख्या में नए–2 जिज्ञासु ज्ञान में आ रहे हैं तो क्या सभी फास्ट जाकर के फर्स्ट 108 की माला में आ जावेंगे? तो इसका यथार्थ उत्तर ता. 22.1.78 की अ.वा. में है, ''लास्ट में आने वाले बच्चों को ड्रामानुसार हाई जम्प द्वारा फास्ट अर्थात् फर्स्ट जाने का गोल्डन चांस वि ोश मिला हुआ है।'' यज्ञ के आदि में जो अच्छे–2 फर्स्ट क्लास बच्चे थे वही पुनर्जन्म के प चात लास्ट*ii* में जब ज्ञान में आते हैं तो पूर्वजन्म की प्रारब्ध के फलस्वरूप हाई जम्प कर जाते हैं। इसलिए मु.ता. 8.3.76, पृ.3 के अन्त में बोला है,''आगे चल नये भी बहुत निकलेंगे। ऐसे नहीं पहले आने वाले ही आगे जावेंगे। बाप कहते हैं पिछाड़ी में आने वालों को तख्त मिलता है तो तीखे हो जाते है।'' तो आगे जाने का मुख्य आधार है परमात्मा बाप की एक्युरेट याद। मु.ता. 4.9.74, पृ.2 के आदि में इसके स्पश्ट संकेत हैं, ''नये–2 पुरानों से तीखे चले जाते हैं। बाप से पूरा योग लग जाये तो बहुत ऊँच चला जावेगा। सारा मदार है ही योग पर।''

16. ,D;qjsV ;kn

योग अर्थात् याद का बल ही एकमात्र आधार है जिसके द्वारा 'इन्द्रिय जीते जगतजीत' बना जा सकता है; लेकिन याद भी यथार्थ और एक्युरेट चाहिए। एक्युरेट से मतलब सिर्फ ज्योतिर्बिंदु निराकार ि ाव को याद करना नहीं; क्योंकि मु.ता. 9.5.71, पृ.2 के मध्य में बोला है,''अच्छा परमात्मा जिसको तुम याद करते हो वह क्या चीज है? तुम कहते हो अखण्ड ज्योति स्वरूप है; परंतु ऐसे है नहीं। अखण्ड ज्योति को याद करना रॉंग हो जाता है। याद तो एक्युरेट चाहिए ना। सिर्फ गपोड़े से काम नहीं चलेगा। एक्युरेट जानना चाहिए।'' अपनी एक्युरेट पहचान के लिए बाबा ने मुरलियों में तो संकेत दिया ही है। साथ ही साक्षात्कार के द्वारा त्रिमूर्ति का चित्र भी बनवाया है। चित्र में एक है ब्रह्मा के रूप में माँ का साकार प्रत्यक्ष पार्ट और दूसरा है भांकर के रूप में त्रिमूर्ति ि ाव का निराकारी स्टेज का गुप्त पार्ट। बाप, टीचर व सदगुरू का

पार्ट। अब याद किस रूप को करना है? जिन बच्चों ने ब्रह्मा के रूप में माँ का साकार पार्ट देखा, उससे प्यार की पालना ली, गोद की अनुभूति ली वे उस प्यार में इतने दीवाने हो गये कि उनको ब्रह्मा माँ का वो साकार स्वरूप ही याद आता है। जबकि ब्रह्मा का विना ी तन होने के कारण बाबा ने मुरलियों में पहले ही स्पश्ट कर दिया था कि ''उस विना ी रूप को याद नहीं करना है।'' मु.ता. 28.3.76, पृ.2 के आदि में बोला है, ''खतम होने वाली चीज को याद नहीं किया जाता हैं। नया मकान बनता है तो फिर पुरानी से दिल हट जाती है। यह है फिर बेहद की बात।'' बेहद की बात इसमें यही है कि ब्रह्मा का तन तो पुराना मकान होने के कारण खतम होने वाला था और ि ावबाबा का नया मकान (ंकर का तन) निर्माणाधीन था। तो दिल उससे लगाने की बात है।^^ मु.ता. 19.4.78, पृ.1 के आदि में बाबा ने स्पश्ट किया है,''मैं यहाँ (ब्रह्मा के) इस भारीर में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ (ंकर के तन में) करना है। जहाँ अब (भविश्य में) आना है। ऐसे नहीं यहाँ (ब्रह्मा को) याद करना है।'' m''बाप कहते हैं तुम इनके (ब्रह्मा के) भारीर को भी याद न करो। भारीर को याद करने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकते।''(मु.ता. 27.4.77)। m''ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विना ा नहीं होंगे। कोई न कोई पाप हो जावेगा। इसलिए इनका फोटो भी न रखो।''(मु.ता. 17.5.71, पृ.4)। जिन बच्चों ने बाबा की मुरलियों के महावाक्यों का गूढ़ अर्थ नहीं समझा वे अब भी ब्रह्मा बाबा के जड़ चित्रों को याद करते रहते हैं और ि ावबाबा को सिर्फ बिंदु समझकर परमधाम में याद करते हैं। जबकि मु.ता. 2.3.78/20.2.83, पृ.2 के मध्य में बोला हैं, ''बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र हों उनको तुम्हें याद नहीं करना है।''

जो बच्चे मम्मा–बाबा के भारीर छोड़ने के प चात ज्ञान में आये, उन्होंने साकार (ब्रह्मा) से पालना नहीं ली तो उन्हें साकार याद भी नहीं आता। वे सुप्रीम सोल को ही याद करते हैं। बाबा ने मुरलियों में जो बिंदु को याद करने का डायरैक ान दिया वह ऊँची स्टेज तक पहुँचने का एक साधन मात्र था। इस पर जिन्होंने अमल किया उन्हें बिंदु को याद करने की पक्की प्रैक्टिस हो गई। ज्योति को याद करने से आत्मा में ज्ञान का प्रका ा आता है। बुद्धि महीन और सूक्ष्म बनती है। महीन बुद्धि ही विचार–सागर–मंथन कर ज्ञान की गहराई में जा सकती है। ज्ञान की गहराई में पहुँचने पर उन आत्माओं को यह ज्ञान होता है कि परमात्मा निराकार है, निराकार को याद करो। इसका वास्तविक अर्थ क्या है? निराकार का अर्थ सिर्फ बिंदु नहीं बल्कि बाप का वो प्रैक्टिकल पार्ट जो निराकारी स्टेज में स्थित है, बाप के उस आकारी व निराकारी स्टेज का सूचक नग्न चित्र त्रिमूर्ति में दिखलाया हुआ है। तो जिन्होंने परमात्मा का प्रैक्टिकल रूप पहचान लिया हो वे सिर्फ बिंदु को क्यों याद करेंगे?

17. flQ fcn dk ;kn djus okys fon'kh vkj fo/keh

इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक आदि जितने भी विधर्मी धर्मपितायें और उनके फालोअर्स हैं वे सब निराकार को याद करते हैं। वे साकार को नहीं मानते। वे राम–कृष्ण को भगवान के रूप में नहीं मानते; क्योंकि वे सब हैं निवृत्ति मार्ग के, जबकि हमारा है प्रवृत्ति मार्ग का धर्म। प्रवृत्ति मार्ग के धर्म में भारीर और आत्मा दोनों की प्रवृत्ति को मानकर चलना पड़े। सिर्फ आत्मा बिंदु को याद करने वाले केवल मुक्ति पायेंगे। वे जीवनमुक्ति नहीं पा सकते अर्थात् डायरैक्ट स्वर्ग में नहीं जा सकते। सुप्रीम सोल बाप जिस साकार तन के द्वारा स्वर्गीय राजधानी की स्थापना करते हैं उस साकार व निराकार के प्रवृत्त रूप को याद करने वाली आत्माएं ही जीवनमुक्ति को प्राप्त करने वाले चरित्रवान देवताएं बनते हैं। अ.वा.ता. 18.1.70, पृ.166 के मध्य में बोला है, ''विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जायेंगे। अगर सिर्फ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आये।''

m ''परमपिता परमात्मा हमको सम्मुख बैठ नालेज देते हैं। उस बाप की ही अव्यभिचारी याद करनी है और कोई के नाम, रूप की याद नहीं करनी है।''

-मु.ता. 4.8.72, पृ.1 आदि

m ''निराकार को रथ तो जरूर चाहिए ना। रथ बिगर क्या करेंगे? ि ावबाबा क्या करेगा? रथ में आवे तब तो तुम उनसे मिलेंगे। तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से बैठूँ तो रथ जरूर चाहिए ना। अच्छा, साकार बिगर निराकार को याद करके दिखाओ। क्या तुमको ज्ञान प्रेरणा से मिलेगा? फिर मेरे पास आये ही क्यों हो?...बाबा कहते हैं मैं साकार बिगर कैसे समझाऊँगा? इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। मैं टीचर के रूप में बैठा हूँ।'' -मु.ता.23.9.87, पृ. 2 अन्त/2.9.02, पृ.3 आदि

m''बाप तो निराकार है फिर वह पतित–पावन कैसे ठहरा? क्या जादू लगाते हैं? पतितों को पावन बनाने जरूर उनको यहाँ आना पड़े।'' -मु.ता. 7.5.77, पृ.1 मध्य

m ''जबकि इनको सबकी सदगति करने आना ही है तो जरूर किस रूप में आवेंगे ना।'' -मु. ता. 6.7.77, पृ.2 अन्त (तो वह रूप है निराकारी व आकारी स्टेज वाला भांकर का नग्न रूप।)

18. EkR;|ykd e| cgek dh vk;|

''जब ब्रह्मा की 100 वर्श आयु पूर्ण हो जाये तब मृत्युलोक में ब्रह्मा समाप्त हो जाता है'' ऐसा बाबा ने मुरलियों व अव्यक्तवाणी में बोला हुआ है। ता. 21.1.69, पृ.21 की अ.वा. मध्य में कहा है, ''आप सोचते होंगे कि लोग पूछेंगे कि आपका ब्रह्मा 100 वर्श से पहले ही चला गया? यह तो बहुत सहज प्र न है, कोई मु किल नहीं। 100 वर्श के नजदीक ही तो आयु थी। यह जो 100 वर्श कहे हुए हैं यह गलत नहीं है। अगर कुछ रहा हुआ है तो आकार द्वारा पूरा करेंगे। 100 वर्श ब्रह्मा की स्थापना का पार्ट है। वह तो 100 वर्श पूरा होना ही है।'' सन् 1969 में जब ब्रह्मा बाबा ने भारीर छोड़ा तब उनकी 100 वर्श आयु पूरी नहीं हुई थी। इसलिए उनको आकार भारीर धारण करना पड़ा। व्यक्त से अव्यक्त ब्रह्मा के रूप में उनका पार्ट जारी रहा। यह पार्ट भी कब तक? जब तक सूक्ष्म भारीर का बंधन भी न समाप्त हो जाए। ब्रह्मा की 100 वर्श आयु की गणना तब से होती है जब से ि ावबाबा की उनमें प्रवे ाता साबित होती है। मुरलियों और अव्यक्त वाणियों के महावाक्यों से यह बात सिद्ध होती है कि सन् 1936/37 में दादा लेखराज में ि ावबाबा की प्रवे ाता नहीं हुई। यदि सन् 36/37 में दादा लेखराज में ि ावबाबा की प्रवे ाता हुई होती तो उस समय उनकी लौकिक आयु 60वर्श होनी चाहिए। 60 वर्श में 40 वर्श और जोड़ने पर सन् 76 में सूक्ष्म भारीर सहित उनकी आयु 100 वर्श पूरी होनी चाहिए; लेकिन ब्रह्मा बाबा की आत्मा तो अभी भी सूक्ष्म भारीर से गुलजार दादी के तन में प्रवे ा कर पार्ट बजा रही है। तो यह बात प्रजापिता ब्रह्मा के ऊपर लागू होती है; क्योंकि सन् 1936/37 में रुहानी बाप ि ाव ने पहले–2 उनमें प्रवे ा किया। तब प्रजापिता की आयु थी 60 वर्श। वही प्रजापिता ब्रह्मा जब दुबारा जन्म लेकर सन् 1969 में ज्ञान में आता है तब तक ि ावबाबा ब्रह्मा के मुख से सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का सम्पूर्ण ज्ञान दे चुके थे। उस ज्ञान के सूक्ष्म मनन–चिंतन–मंथन की आकारी स्टेज को धारण करने के फलस्वरूप उस प्रजापिता (राम बाप) को अपने स्वरूप की, अपने पार्ट की पूरी पहचान हो जाती है। उसे ड्रामा पर और अपने पार्ट पर ऐसा पक्का नि चय हो जाता है कि कोई भी उसके नि चय को हिला नहीं सकता। इस तरह सन् 76 से वह राम वाली आत्मा ब्राह्मणों की एडवांस पार्टी की दुनियाँ में वि वनाथ भांकर के नाम–रूप से प्रत्यक्ष हो जाता है। उसके पूर्वजन्म की भोश 40 वर्श आयु भी यहाँ एड हो जाती है और सन् 76 में प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में उसके 100 साल पूरे हो जाते हैं। उसका मृत्युलोक समाप्त हो जाता है तथा अमरलोक की स्टेज में अमरनाथ बाप के रूप में उनका नया पार्ट भुारू हो जाता है। अमरनाथ माने कोई ज्ञान में उन्हें मार नहीं सकता अर्थात् अपने नि चय पर ध्रुव तारे की तरह अटल। इसलिए भांकर को जन्म–मरण से परे की निराकारी, निर्विकारी व निरसंकल्प स्टेज में दिखाया जाता है।

19. Ckgek dk i|tkfirk dk VkbfVy

अब कोई–2 बच्चे यह भी प्र न उठाते हैं कि वो राम वाली आत्मा याने प्रजापिता तो बीच में यज्ञ में रहा ही नहीं तो उसके 40 वर्श की भोश आयु का हिसाब कहाँ से लग गया? तो इसका जवाब भी सहज है। जैसे किसी स्कूल–कॉलेज का प्रिंसिपल छुट्टी पर चला जाय तो

उसके स्थान पर कार्यवाहक प्रिंसिपल रखा जाता है। जब वह प्रिंसिपल पुनः अपनी ड्यूटी ग्रहण करेगा तो उसकी बीच की अनुपस्थिति भी ड्यूटी में गिनी जाती है और उसकी सर्विस कन्टिन्यू मानी जाती है। ठीक ऐसे ही इस ई वरीय वि व विद्यालय का वास्तविक टीचर प्रजापिता चला गया तो बीच में उसका कार्य उनके सबसे बड़े बच्चे (दादा लेखराज ब्रह्मा) ने सम्भाला। यह बात सन् 65/66 में मम्मा के भारीर छोड़ने के प चात मुरलियों में बाबा ने स्पश्ट की थी। मु.ता. 1.1.73, पृ.3 के अन्त में बाबा ने बोला है, ''इतनी ब्रह्माकुमारियाँ हैं तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा।'' इससे पहले की मुरलियों में बाबा ने प्रजापिता की बात नहीं उठाई; क्योंकि मम्मा के भारीर छोड़ने से पहले प्रजापिता की बात उठाने का मतलब ही नहीं। उस समय तो वे आत्माएं यज्ञ में थी ही नहीं। जब राम–सीता वाली आत्माओं में से पहले कोई एक पुनः यज्ञ में वापस आ गई तब ब्रह्मा बाबा को प्रजापिता का टाइटिल दिया गया। ता. 7.9.77, पृ.2 की रिवाइज मुरली के आदि में बोला है,''ब्रह्माकुमारियों के आगे प्रजापिता अक्षर जरूर लिखना है। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है।'' साक्षात्कार से जो मुख्य चार चित्र बनाये गये हैं उनमें पहले वाले पुराने दो चित्रों (त्रिमूर्ति और कल्पवृक्ष) में तो सिर्फ 'ब्रह्माकुमारी ई वरीय वि वविद्यालय' लिखा है और सन् 65/66 के बाद बने दो चित्रों (लक्ष्मी–नारायण व सीढ़ी) में 'प्रजापिता' भाब्द एड कर दिया गया है। मुरलियों के महावाक्यों से यह बात स्पश्ट रूप से सिद्ध होती है कि हम ब्राह्मण सिर्फ ब्रह्मा माँ के ही बच्चे नहीं हैं बल्कि हमारा बाप भी है, प्रजापिता। हम माता–पिता दोनों की संतान हैं। मु.ता. 4.11.72, पृ.2 आदि/6.11.97, पृ.2 मध्य में बोला है, ''वर्सा देने के लिए जरूर ब्रह्मा तन में आवेंगे। यह प्रजापिता ब्रह्मा है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोड़े ही प्रजा रचेंगे। हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ स्थूल में हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा भी स्थूल में है। यह राज बैठ समझो।''

m ''बाबा ने रात को भी समझाया बी.के. के आगे 'प्रजापिता' अक्षर जरूर डालना है। यह ऐसे–2 अक्षर भूले नहीं। ब्रह्मा नाम भी आजकल बहुतों के हैं। फीमेल्स का भी ब्रह्मा नाम है इसलिए सदैव लिखो प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ।''

-मु.ता. 25.10.90, पृ.3 अन्त

m ''तुम अगर ब्राह्मण हो तो ब्रह्मा कहाँ है? तुम्हारा बाप कहाँ हैं? ब्रह्मा नाम तो कह नहीं सके। फिर तुम ब्राह्मण कैसे कहते हो? ब्राह्मण तो प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान थे। यह भी भारीर में है ना। अब तुम हो सच्चे ब्राह्मण और वो हैं झूठे ब्राह्मण।'' (मु.ता. 17.9.69, पृ.2 मध्य)

सच्चे ब्राह्मण तभी होंगे जब माता–पिता (प्रजापिता और ब्रह्मा) दोनों की ही पहचान हो और अपने नाम के साथ भी सिर्फ 'ब्रह्माकुमार–कुमारी' न लिखें बल्कि 'प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारी' लिखें। तो मुरलियों के महावाक्यों से यह बात स्पश्ट रूप से सिद्ध हो रही है कि प्रजापिता तो यज्ञ के आदिवाला वह व्यक्ति था जिसे यज्ञ में 'पीउ' के नाम से जाना जाता रहा। अब उनका नाम बिल्कुल गुम कर दिया गया है। जैसे भक्तिमार्ग की गीता में भी बाप (ि ाव भांकर भोलेनाथ)को गुम करके बच्चे (कृश्ण) को प्रत्यक्ष किया गया है।

20 . Ckgek vkj i tkfirk& vkRek, tnk&tnk

बाबा ने मुरलियों में यह बात स्पश्ट कर दी है कि प्रजापिता का पार्टधारी इस सृष्टि रूपी रंगमंच से कभी ऊपर नहीं जाता; क्योंकि उसका तो आलराउंड पार्ट है। ब्रह्मा भल भारीर छोड़कर सूक्ष्मवतनवासी हो जाय; लेकिन प्रजापिता साकार भारीर में रहते हुए भी अपनी सूक्ष्म स्टेज बनाने का अभ्यासी होता है। अ.वा.ता. 11.2.71, पृ.26 के मध्य में बोला भी है, ''उस समय आप इस स्थूल स्वरुप के भान से परे रहते हो। इसलिए इनको सूक्ष्म भारीर भी कह दिया है।'' प्रजापिता को अलग व्यक्तित्व स्वीकार न करने वाले ब्राह्मणों के लिए ता. 7.4.69, पृ.4 व 17.9.69, पृ.2 की मुरलियों में प्र न किया है, ''तुम अगर ब्राह्मण हो तो ब्रह्मा कहाँ है? तुम्हारा ब्रह्मा बाप कहाँ है?'' वे ब्राह्मण कह देंगे कि ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतन में है। ये कोई दुनियाँवी ब्राह्मणों की बात नहीं है बल्कि हम संगमयुगी ब्राह्मणों की बात है; क्योंकि यहाँ ही ऐसे ब्राह्मण हैं जिन्हें यही पता नहीं है कि ब्राह्मणों की सृष्टि रची जा रही है तो प्रजापिता ब्रह्मा भी जरूर

इसी सृष्टि पर होना चाहिए। मु.ता. 17.3.78, पृ.3 के मध्य में बोला है, ''प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ कल्प के संगम पर होना चाहिए तब तो ब्राह्मणों की नई सृष्टि रची जाए।'' जब ब्राह्मण व्यक्त में हैं तो उनके माता–पिता भी व्यक्त में होना चाहिए। इसलिए मु.ता. 5.8.73, पृ.2 के मध्य में बोला है, ''व्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। सूक्ष्मवतन में तो प्रजापिता नहीं होता है। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ चाहिए।''
m''ि ावबाबा खुद कहते हैं जब मैं ब्रह्मा तन में प्रवे ा करूँ तब तो ब्राह्मण सम्प्रदाय हो। ब्रह्मा यहाँ ही चाहिए। वह सूक्ष्मवतन वासी तो अव्यक्त ब्रह्मा है। मैं इस व्यक्त में प्रवे ा करता हूँ।''(मु.ता. 2.5.92, पृ.1 अंत)। तो प्रजापिता अलग व्यक्तित्व और ब्रह्मा अलग व्यक्तित्व है। यज्ञ में गल्ती से दोनों को मिलाकर एक ही समझ लिया गया है। जैसे लौकिक संसार में माता–पिता अलग–2 व्यक्तित्व होते हैं ऐसे ही ब्राह्मणों की अलौकिक दुनियाँ में बाप का लॉफुल पार्ट बजाने वाली प्रजापिता की आत्मा और ब्रह्मा माँ (कृष्ण) की आत्मा अलग व्यक्तित्व है। अब कैसे अन्तर करें? तो मुरलियों में यह दोनों व्यक्तित्व अलग–2 इंगित किये हुए हैं। m''मुझे ब्रह्मा जरूर चाहिए तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए। जिसमें प्रवे ा करके आऊँ, नहीं तो कैसे आऊँ? यह मेरा मुकर्रर है। कल्प–2 इसमें ही आता हूँ (ब्रह्मा तो टेम्परारी रथ है)।''(मु.ता. 15.11.87, पृ.3 आदि)। m''ि ावबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्रह्माकुमार–कुमारियों को वर्सा देते हैं। ब्रह्मा द्वारा ि ावबाबा ब्राह्मण कुल की रचना रचते हैं।'' (मु.ता. 1.3.76, पृ.3 मध्य)

अब पहले कौन सा कार्य होगा? पहले तो जरूर रचना होगी। तो आदि में प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा ज्ञान का बीजारोपण हुआ और दादा लेखराज (ब्रह्मा) द्वारा सिर्फ नम्बरवार ब्राह्मणों की रचना हुई। अभी वि व की बाद ााही का वर्सा किसी को भी नहीं मिला। जबकि ब्रह्मा तो भारीर छोड़कर अव्यक्त हो गए। अब वर्सा किसके द्वारा मिले? तो क्रम ाः ता.6.3.76, पृ.1 मुरली के मध्य में बोला है, ''प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा आकर सर्व की सदगति करते हैं। उनको ही सब पुकारते हैं, देखते हैं ना।'' m''प्रजापिता जो होकर गये हैं वह इस समय प्रेजेंट हैं।'' (मु.ता. 4.3.88, पृ.1 आदि)। तो यज्ञ के आदि वाला वही व्यक्तित्व दुबारा जन्म लेकर सन् 69 में पुनः ज्ञान में आ जाता है और अपने तीव्र पुरुशार्थ से पहले चोटी का ब्राह्मण बनता है। इसलिए भास्त्रों में तथा चित्रों में भांकर को यज्ञोपवीतधारी श्रेश्ठ ब्राह्मण दिखाया गया है। अभी उन्हें प्रजापिता नहीं कहेंगे। अक्सर बच्चों से यह भूल हो जाती है कि वे भांकर को ही प्रजापिता समझ लेते हैं। जबकि वह चोटी अर्थात् ि ाखर का ब्राह्मण तो है; लेकिन प्रजापिता तब तक नहीं कहेंगे जब तक इस दुबारा जन्म में पिता का जो कार्य है वह पूरा करके न दिखा दे। पिता का काम है आदि में बीजारोपण करना व अंत में वर्सा देना। तो भांकर के रूप में योगबल के द्वारा वह जब तक एक धर्म, एक राज्य, एक भाशा, एक मत तथा श्रेश्ठ प्रवृत्तिमार्ग की स्थापना करके न दिखा दे तब तक प्रजापिता नहीं कहला सकता। जब उनके द्वारा 550 करोड़ मनुश्य आत्माओं अथवा उन 550 करोड़ की बीजरूप 108 आत्माओं को राजाई का वर्सा देने वाले बाप के प्रैक्टिकल स्वरूप का साक्षात्कार हो जावे तब वे प्रजापिता कहे जावेंगे। ''मु.ता. 8.7.74, पृ.1 मध्य/1.7.94, पृ.1 अंत में बाबा ने बोला है, ''जब फादर है तो जरूर फादर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहे और कब मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता? सारी दुनियाँ की जो भी आत्माएं हैं सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो भी मुराद है, आ ा है, वह पूर्ण करते हैं।'' बाप के इस प्रैक्टिकल रूप की पहचान सीढ़ी व झाड़ के चित्र में भी दी गई है। सीढ़ी के चित्र में जो उत्थान और पतन की पूरे पाँच हजार वर्श की आलराउंड कहानी दिखाई गई है वह भी कोई कृश्ण बच्चे (ब्रह्मा) की कहानी नहीं बल्कि राम बाप (प्रजापिता) की कहानी है। उस राम बाप अर्थात् भारत को सीढ़ी के आदि में संगमयुगी कृश्ण बनाम संगमयुगी नारायण के रूप में फुल प्रिंस तथा सीढ़ी के अंत में काँटों की भौया पर लेटे गरीब ब्राह्मण सुदामा के रूप में फुल बैगर अर्थात् निर्धन भारत दिखाया गया है। तो वह आलराउंड पार्टधारी मुकर्रर रथ संगमयुग में तब तक साकार सृश्टि पर पार्ट बजाता है जब तक इस सृश्टि की 550 करोड़वीं मनुश्य आत्मा भी ऊपर से नीचे न आ पहुँचे। झाड़ के चित्र में भी आत्माएं ऊपर जा रही हैं तथा ऊपर में भांकर का चित्र दिखाया गया है। तो उस समय वह प्रजापिता का पार्ट साबित हो जाता है।

21. ^f=efr] dh ck;kxkQh^& cgek yoQy] 'kdj ykQy

त्रिमूर्ति के चित्र में जो तीन मूर्तियों का चित्रण किया गया है उनमें पहली मूर्ति ब्रह्मा को सहज स्थिति में तथा दूसरी मूर्ति भांकर को अकड़ की मुद्रा में बैठे हुए दिखाया गया है। ऐसा क्यों? तो यह उनके स्वभाव, संस्कारों को, उनके पार्ट की वि ोशता को चित्रित किया गया है। जैसे ब्रह्मा का माँ का पार्ट है तो उन्हें लवफुल स्टेज में सहज रीति से बैठा हुआ दिखाया गया है। जबकि भांकर का पार्ट है लॉफुल। तो उन्हें स्ट्रिक्ट स्वभाव, कठोर स्वभाव की सूचक अकड़ की मुद्रा में दिखाया गया है। लॉ (कानून) किसी के आगे कभी झुकता नहीं है। तो लॉफुल पार्टधारी भांकर भी पक्का अहमदाबादी है; क्योंकि अहमदाबाद बीज रूप सेंटर से उनको ज्ञान का अलौकिक जन्म मिलता है। अहमदाबाद (अहम–दा–बाद) माने 'अहम' अर्थात् 'अहंकार', 'दा' अर्थात् 'देने वाला', 'बाद' अर्थात् 'अंत में'। इसका अर्थ हुआ 'अंत में अपना अहंकार देने वाला'। सारी दुनियाँ को झुकाने के बाद फिर वो झुकता है। तो पार्ट की यह वि ोशता चित्र में दिखाई गई है।

22. cgek oL=/kkjh vkj 'kdj fuoL=

त्रिमूर्ति के चित्र में विचारणीय बात यह भी है कि ब्रह्मा को तो कपड़े पहने हुए दिखाया गया है और भांकर को लंगोट तक भी नहीं दिखाया गया है। ऐसा क्यों? तो यहाँ कोई स्थूल वस्त्रों की बात नहीं है। हमारा तो है ही बेहद का ज्ञान। यहाँ कपड़े का मतलब है भारीर रूपी वस्त्र। ब्रह्मा जब तक जीवित रहे उन्हें अपने भारीर रूपी वस्त्र (देह) का भान रहा। उनकी निराकारी स्टेज नहीं बनीं। कोई कहे इसका क्या प्रूफ है? तो इसका प्रूफ है इस सृश्टि रूपी रंगमंच के जितने भी मुख्य–2 धर्मपितायें हैं उनके चित्रों को ध्यान से देखिये। चाहे क्राइस्ट हो, चाहे बुद्ध हो अथवा गुरूनानक हो उनके चेहरे को देखने से लगता है कि वो जैसे इस सृश्टि पर नहीं हैं। उनकी दृश्टि और वृत्ति ऊपर निराकारी दुनियाँ में लगी हुई है। उनका चेहरा ही उनकी निराकारी स्टेज को द ााता है। जबकि ब्रह्मा बाबा की किसी भी फोटो में ऐसी निराकारी स्टेज देखने में नहीं आती। मुरली में भी बाबा ने बोला है, ''माँ होती है साकार और बाप होता है निराकार।'' निराकार का अर्थ सिर्फ बिंदु नहीं बल्कि निराकारी स्टेज वाला। तो भांकर को नग्न दिखाने का अर्थ भी यही है कि भांकर का पार्टधारी जरूर निराकारी स्टेज वाला होता है।

23. 'kdj dk 0;Dr :Ik e: v0;Dr ikV]

अब कोई–2 ब्राह्मण यह भी कहते हैं कि भांकर का पार्ट तो बाबा ने मुरलियों में बताया ही नहीं है। मु.ता. 29.5.85, पृ.2 के आदि में बाबा ने तो कहा है, '' ांकर का पार्ट कुछ भी है नहीं। ... ांकर क्या करते है? कुछ भी नहीं।'' m'' ांकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो तुम वि वास कर न सको।''(मु.ता. 14.5.70, पृ.2 आदि) m''सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विश्णु, ांकर का भी मंदिर यहाँ है; क्योंकि आते तो हैं ना।''(मु.ता. 25.6.73, पृ.1 अन्त)

भांकर का पार्ट अस्वीकार करने वाले बच्चों से बाबा ने डायरैक्ट प्र न किया है, ''कुमारका! बताओ ि ावबाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते 500 करोड़, कोई कहते एक ब्रह्मा बच्चा है। क्या भांकर बच्चा नहीं है? तब किसका बच्चा है? यह भी गुंजाइ ा है। मैं कहता हूँ ि ावबाबा के दो बच्चे हैं; क्योंकि ब्रह्मा वह तो विश्णु बन जाते हैं। बाकी रहा भांकर। तो दो हुए ना। तुम भांकर को क्यों छोड़ देती हो? भल त्रिमूर्ति कहते हैं; परंतु आक्युपे ान अलग–2 हैं ना।''(मु.ता. 14.5.72, पृ.2 अन्त/9.5.92, पृ.2 मध्य)। भांकर के पार्ट को, भांकर के चरित्र को स्पश्ट करने के लिए बाबा ने मु.ता. 7.5.69/20.4.89, पृ.1 के मध्य में कहा है,''यह त्रिमूर्ति तो दिखाया जाता हैं उसमें वास्तव में होना चाहिए ब्रह्मा, विश्णु और ि ाव, न कि भांकर; परंतु बाजू में ि ाव को कैसे रखें? तो फिर भांकर को रख दिया है और ि ाव को ऊपर में रखा हैं। इससे भाोभा अच्छी होती है। सिर्फ दो से भाोभा न हो। नहीं तो वास्तव में भांकर का कोई पार्ट है नहीं।'' इसका मतलब क्या है? भांकर के चित्र के बिना त्रिमूर्ति की भाोभा क्यों नहीं हो सकती? वास्तव में चित्र होता है चरित्र की यादगार। भांकर का चित्र भी उनके

निराकारी स्टेज का चित्रण है। निराकारी अर्थात् निःसंकल्प स्टेज में रहकर जो कर्म किये जाते हैं उनका कोई पाप और पुण्य नहीं बनता है तो वह कर्म किया ना किया बराबर हो जाता है। इसलिए कहा भांकर का कोई पार्ट नहीं है। भांकर को तो चित्रों में ध्यानमग्न अवस्था में बैठे हुये दिखाया जाता है। इसका मतलब वो कोई कर्मइन्द्रियों से ऐसा पार्ट बजाने वाली आत्मा नहीं है जिसका चित्रण हो सके। भांकर याने राम वाली आत्मा अपने पूर्वजन्म में यज्ञ के आदि में इतनी तमोप्रधान बन चुकी होती है कि जब वह दुबारा अपने अगले जन्म में सन् 69 में यज्ञ में आती है तो अपने पूर्वजन्म के पाप कर्मों का बोझा अपने ऊपर लेकर आती है। अपने इस दूसरे ब्राह्मण जन्म में यदि वो लगातार याद की स्टेज में न रहे तो उसके पापों का खात्मा हो नहीं सकता। इसलिए उसका तो एक ही काम है निरंतर याद।याद को पार्ट नहीं कहा जाता। पार्ट होता है कर्मेन्द्रियों के हलन–चलन के द्वारा, जबकि याद करने का कार्य कोई कर्मेंद्रियों से नहीं होता। यह तो मन–बुद्धि से किया जाता है। इसलिए मुरलियों में बोला है भांकर का कोई पार्ट नहीं। बाकी यह नहीं कहा कि भांकर नहीं है।

24. ‘kadj vFkkZr feDl ikVZ

बाबा ने मुरलियों में बोला है, ''तुम बच्चे भांकर को काटोगे, उसके अस्तित्व को काटोगे तो वो भी तुम्हें काट डालेगा;'' क्योंकि भांकर तो है पावरफुल सोल। इसलिए उसके अस्तित्व को उड़ाना नहीं। भांकर का अस्तित्व है, तब तो दुनियाँ में, दे ा–विदे ों में जितनी भी खुदाइयां हुई हैं उनमें सबसे ज्यादा संख्या में भांकर की नग्न मूर्तियां मिली हैं। दूसरे किसी भी देवता की इतनी मूर्तियां नहीं मिली हैं। इससे साबित होता है कि संसार में सबसे ज्यादा पूजनीय व माननीय भांकर का अस्तित्व ही है। बाकी मंदिरों में जो लिंग दिखाया जाता है वह भी कर्मेंद्रियों के भान से परे रहने वाले भारीर का सूचक है। याने जो सारा भारीर है वही लिंग है तथा उसमें बीच में जो सफेद बिंदु है वह सुप्रीम सोल ि ाव की प्रवे ाता दिखाई गई है। लिंग भी ज्यादातर काला व कहीं लाल भी दिखाया जाता है। काला रंग तामसी स्टेज व लाल रंग क्रांति का सूचक है। भांकर अर्थात् मिक्स पार्ट। एक ही भारीर रूपी रथ में ि ाव–राम–कृश्ण तीन आत्माएं अलग–2 पार्ट बजाती है। कभी सतस्वरूप ि ाव की सोल कार्य कर रही है, कभी रजोप्रधान ब्रह्मा की सोल कार्य कर रही है और तमोप्रधान राम की आत्मा तो स्वयं उसमें बैठी ही है। तो भांकर का है वंडरफुल पार्ट जिसे बच्चे समझ नहीं सकते। भांकर तो नि ि चत रूप में है; लेकिन उसकी आत्मा परमपिता ि ाव की याद में निरंतर लीन है। बाकी उसके तन से ज्ञान सुनाने, राजधानी स्थापित करने तथा यूनिटी बनाने का पार्ट सुप्रीम सोल ि ाव का है जो एवर प्योर है। भोश सारा कार्य ब्रह्मा की सोल का है।

25. LFkkiuk lk fouk’k

ब्रह्मा की सोल भांकर के तन से क्या पार्ट बजाती है? वही जो कैसेट में गीत बजा रखा है, 'गूंजी विना ा की वाणी फिर भी कितनी कल्याणी।' इसका वास्तविक अर्थ भी ब्राह्मण जानते नहीं; क्योंकि विना ा की वाणी जो मुख से गुजायेगा, बोलेगा वो कोई तो व्यक्तित्व होगा ना। दादा लेखराज वाले व्यक्तित्व से तो ऐसी विना ा की वाणी कभी गूंजी नहीं; परंतु भारीर छोड़ने के प ्चात उनकी आत्मा किसी ब्राह्मण बच्चे (ंकर) में प्रवे ा करके विना ा की वाणी गुंजाती है। अब प्र न उठता है कि जिस आत्मा ने ऐसा प्यार भरा मधुर पार्ट बजाया हो, कभी टेढ़ी नज़र से भी किसी को दुःख नहीं दिया हो वो विना ाकारी वाणी भला कैसे चलायेगी? तो बाबा ने मुरलियों में स्पश्ट किया है कि ''हर आत्मा का कार्य है स्थापना, विना ा व पालना का। जो स्थापना करेगा वह विना ा भी करेगा। जब तक वह विना ा का कार्य सम्पन्न न करे तब तक वह स्वर्ग के गेट में पास नहीं हो सकता। गेट वे टू हैविन इज महाभारी महाभारत युद्ध।'' महाभारत युद्ध से हर आत्मा को जरूर गुजरना पड़े। चाहे वह मनसा की पावर से लड़े, चाहे वाचा की पावर से लड़े। तो ब्रह्मा की आत्मा भी राम (ंकर) के मुख से ऐसी तीखी–2 बातें सुनाती है कि ब्राह्मणों की दुनियाँ में घुसे हुए असुरों का दिल छटपटाने लगता है। उनको जैसे घाव लगते हैं, मिर्ची लगती है। ता. 9.5.73, पृ.3 अन्त की मु. में बाबा ने बोला है, ''सच जब निकलता है तो झूठ सामना करते हैं। ...तुम किसको सच बताते हो तो जैसे

मिर्ची लगती है।'' कहावत है कि 'जब सीधी उंगली घी न निकले तो उसे टेढ़ी करना पड़े।' तो ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा की आत्मा भी वक्र रूप धारण करती है। इसलिए यह भी कहावत है कि 'वक्र चंद्रमा ग्रसे न राहू।' भांकर के माथे पर अधूरा चंद्रमा दिखाने का कारण भी यही है कि लवफुल पार्ट बजाने वाली ब्रह्मा की आत्मा भांकर के तन में प्रवे ाकर लॉफुल पार्ट धारण करती है।

26. fo".k pr|Hk|t

त्रिमूर्ति के पुराने 30''X40'' के चित्र में विश्णु मूर्ति के नीचे की लिखत में जो चार नाम 'लक्ष्मी–नारायण' और 'राम–सीता' दिये हुए हैं वे विश्णु की भुजाओं के रूप में चार सहयोगी आत्माएं हैं। यही विश्णु चतुर्भुज का वास्तविक स्वरूप है; लेकिन बाद में जो अंग्रेजी और गुजराती भाशा में त्रिमूर्ति का चित्र बनाया गया उसमें से अज्ञानताव ा राम–सीता का नाम उड़ा दिया गया। ब्रह्मा बाबा ने भी इस पर गौर नहीं किया। इसका मतलब उनकी बुद्धि में भी यह बात नहीं आई कि चार भुजाओं का वास्तविक अर्थ क्या है? उन्होंने दो भुजा लक्ष्मी की और दो भुजा नारायण की समझ ली। यह नहीं समझा कि संगमयुगी लक्ष्मी–नारायण तथा सतयुगी 16 कला सम्पूर्ण लक्ष्मी–नारायण के स्वभाव–संस्कारों का जो मेल संगमयुग में होता है वही विश्णु का रूप है। यही चार आत्माएं सतयुग और त्रेता में नारायण का राज्य और रामराज्य स्थापित करने के लिए निमित्त बनती हैं। तभी तो बाबा ने मुरली में बोला है, ''विश्णु के दो रूप लक्ष्मी–नारायण के तो बच्चे पैदा होते हैं, जो तख्त पर बैठते हैं। (मु.ता. 6.9.92, पृ.2 मध्य)। m''विश्णु की भी 4 भुजा, फिर ब्रह्मा सरस्वती और भांकर के साथ पार्वती दिखाते हैं।''(मु.ता. 28.9.90, पृ.1 अन्त)। विश्णु की चार भुजा में से दो भुजा ब्रह्मा की तरफ तथा दो भुजा भांकर की तरफ दिखाई गई है; लेकिन भांकर कोई भुजा नहीं है, वह तो स्वयं भुजाओं का चलाने वाला, डायरैक ान देने वाला, करावनहार परमात्मा पार्ट है। अ.वा.ता. 18.1.78, पृ.35 के मध्य पर भी इसका उल्लेख है, ''हजार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है। तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाए बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकती। भुजाएं बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं।'' तो कराने वाला बाप धर्मराज भांकर का पार्ट तो वर्तमान समय चल रहा है; लेकिन हजार भुजाओं में मुख्य चार भुजायें कौन? तो चार भुजायें हैं ब्रह्मा–सरस्वती और पार्वती–जगदम्बा। ब्रह्मा–सरस्वती को तो सभी ब्राह्मण जानते, पहचानते हैं; लेकिन पार्वती और जगदम्बा फिर कौन? तो मुरलियों में अनेकों बार जिक्र आया है कि ''अच्छी–2 बच्चियाँ जो मम्मा–बाबा के लिए भी डायरैक ान ले आती थी, ड्रिल कराती थी। उनके डायरैक ान पर हम चलते थे। सभी से जास्ती दुर्गति में वह चले गये। यह बच्चियॉ भी जानती है।''(मु.ता. 28.5.69, पृ.2 अन्त)। m''मम्मा–बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे डायरेक ान देती थी ऐसे–2 करो। टीचर हो बैठती थी। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेगी। वह भी गुम हो गये।''(मु.ता. 28.5.74, पृ.2 अन्त)। तो उनमें से जो पहली बच्ची अर्थात् बड़ी माँ (ब्रह्मा) याने गीता माता थी वह पुनर्जन्म के प चात जगदम्बा के रूप में ब्राह्मणों की एडवांस पार्टी की दुनियाँ में रुद्रमाला की हेड के बतौर प्रत्यक्ष हो जाती है। दूसरी बच्ची पुनर्जन्म के प चात पुनः यज्ञ में पालना लेती है तथा 'छुपा रुस्तम बाद में खुले' के अनुसार संगमयुगी राधा उर्फ संगमयुगी लक्ष्मी का पार्ट धारण कर ब्राह्मणों की दुनियाँ में बाद में प्रत्यक्ष होती है। (नोट– इसकी विस्तृत जानकारी के लिए लक्ष्मी–नारायण एडवांस कोर्स समझें)

इस तरह विश्णु का जो चित्र है वह भी यहाँ अर्थ सहित है। उसमें जो अलंकार है वे इस बात के सूचक है कि संगमयुग में लक्ष्मी–नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होने वाली आत्माएं गुणों से व ज्ञान रत्नों से भरपूर होंगी। इसलिए विश्णु का सम्पन्न रूप दिखाया जाता है। ब्रह्मा का रूप सम्पन्न रूप नहीं है। भांकर का जो रूप है वह भी सम्पन्न रूप नहीं है; क्योंकि वह 'गॉडफादर इज वन' कहा जाता है तो अकेला हुआ ना; लेकिन जब जगदम्बा और पार्वती तथा ब्रह्मा और सरस्वती स्वभाव व संस्कारों से कम्बाइंड होते हैं तो विश्णु का टाइटिल धारण करते हैं। ये विश्णु द्वारा पालना कौन से जन्म से भाुरू होती है? 21 जन्मों में से जो पहला जन्म है

वहाँ से ये विशणु की पालना भुारू होती है। यह सतयुगी लक्ष्मी–नारायण की बात नहीं है बल्कि संगमयुगी लक्ष्मी–नारायण की बात है।

27. ijekRek dk u;k ikVZ

अब अधिकां ा ब्रह्माकुमार/कुमारी यह प्र न करते हैं कि अगर भांकर का पार्ट है तो बाबा ने मुरलियों और अव्यक्तवाणियों में स्पश्ट क्यों नहीं बताया कि जैसे ब्रह्मा का साकार में पार्ट है ऐसे भांकर का भी प्रैक्टिकल में पार्ट होगा। तो इसका स्पश्ट उत्तर यह है कि बाबा ने मुरलियों में कहा है ''जो असली ब्राह्मण सो देवता बनने वाले हैं उनके लिए इ ाारा ही काफी है।'' सीधे बता दिया जाय तो फिर परीक्षा किस बात की? बाप को पहचानने की भी एक परीक्षा है। यह बाप की पहचान का पेपर या परीक्षा सबसे बड़ी परीक्षा है। ज्ञान का मुख्य सब्जेक्ट भी बाप की पहचान का ही है। इसमें पास हुए बिगर याद की यात्रा में सम्पन्न हो नहीं सकते। तो मुरलियों में परमात्मा के नये पार्ट की पहचान के लिए अनेकों महावाक्य बाबा ने बोले हुए हैं। मु.ता.11.7.70, पृ.2 के मध्य में बोला है,''मैं थोड़े समय के लिए इनमें प्रवे ा करता हूँ। यह तो पुरानी जूती है। पुरुश की एक स्त्री मर जाती है तो कहते हैं पुरानी जूती गई, अभी फिर नई लेते हैं। यह भी पुराना तन है ना।'' स्पश्ट है कि ि ावबाबा का भी पहले से इरादा था कि आगे चलकर नया नौजवान तन लेना है। बाबा हमे ाा मुरलियों में कहते हैं कि ''बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते हैं।'' हद की दुनियाँ में बुद्धि लगाने वाले बच्चे उन बेहद की बातों का भी हद में अर्थ लगा लेते हैं। बाबा ने तो अनेकों इ ाारे दिये हैं। जैसे मु.ता. 23.8.73, पृ.3 एवं 2.8.73 के आदि में बोला है, ''एक दिन टेलीविजन भी निकलेगा ;परंतु सभी तो देख नहीं सकेंगे। देखेंगे बाबा मुरली चला रहे हैं। आवाज़ भी सुनेंगे।'' ब्रह्मा बाबा के साकार भारीर से तो यह पार्ट चला नहीं। अब रही गुल्जार दादी की बात, तो उन्हें कोई ि ावबाबा कहा जा सकता है क्या? अगर ि ावबाबा कहा जाय तो फिर ब्रह्मा भी उनको कहा जाय। फिर तो उनको धोती–कुर्ता पहना के बैठा लो; क्योंकि साड़ी–ब्लाउज वाला ब्रह्मा तो भाास्त्रों में, चित्रों में कहीं नहीं दिखाया गया। तो स्पश्ट है कि बाबा का कोई प्रैक्टिकल पार्टधारी रथ है जरूर जो आगे चलकर टेलीविजन के माध्यम से भी प्रत्यक्ष होना है। अ.वा.ता. 16.1.75, पृ.16 की आदि में भी स्पश्ट किया है, ''घबराओ मत बैकबोन बापदादा सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति (व्यक्त तन) द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं।'' तो 'घबड़ाओ मत' यह आ वासन किसको दिया? जरूर यज्ञ में ही कोई बच्चे हैं जो बड़े–2 महारथियों की ऊपर–नीचे की चलन को देख–2 कर घबड़ा रहे हैं कि यह कैसा स्वर्ग स्थापन हो रहा है? बापदादा याने ि ाव और ब्रह्मा भांकर के पार्टधारी ब्राह्मण बच्चे में प्रवे ा कर बैकबोन अर्थात् पीछे से मददगार हैं जिसे कोई वि ोश बच्चे ही जान सकते हैं। सामना भी दु मनों का किया जाता है। तो जरूर ब्राह्मणों की दुनियाँ में ही कोई आस्तीन के साँप बनकर यज्ञ में घुसे हुए हैं जो ज्ञान यज्ञ को तहस–नहस कर रहे हैं। जैसे भाास्त्रों में दिखाया गया है कि वि वामित्र के यज्ञ को राक्षस नश्ट करना चाहते थे। तब वे यज्ञ की रक्षा के लिए राम–लक्ष्मण को ले गए। यहाँ भी वि व कल्याणार्थ सन् 76 से बैकबोन बापदादा को भी राम के अंतिम पुनर्जन्म के साधारण ब्राह्मण तन में कलियुगी, आसुरी, जीवनबद्ध सृश्टि के विना ा के लिए प्रत्यक्ष होना पड़ा। 'चैरिटी बिगन्स एट होम' के अनुसार कल्याणकारी विना ा की भाुरुआत भी पहले ब्राह्मणों की ही संगमयुगी दुनियाँ से होती है।

28. ,Mokal ikVhZ

m ''एडवांस पार्टी तो साकार भारीर परिवर्तन कर सेवा कर रही है; लेकिन कोई कोई का पार्ट अंत तक साकारी और आकारी रूप द्वारा भी चलता है। आपका क्या पार्ट है? किसका एडवांस पार्टी का पार्ट है, किसका अन्तःवाहक भारीर द्वारा सेवा का पार्ट है? दोनों पार्ट का अपना–2 महत्व है। फर्स्ट सेकेण्ड की बात नहीं। वैराइटी पार्ट का महत्व है। एडवांस पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह जोर– ाोर से अपना प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामी–ग्रामी

हैं।'' -अ.वा. 25.1.80, पृ.245 अन्त ,पृ.246 आदि/रि. 2.5.99, पृ.2 अंत (नामी–ग्रामी साकार सृश्टि पर होते हैं)।

m ''बहुत बच्चे एडवांस में भी जाने वाले हैं। उनका कोई अफसोस नहीं करना है। जाकर रिसीव करेंगे। रिसीव करने के लिए भी टाइम चाहिए ना। माँ–बाप तो पहले जाने चाहिए ना।'' -मु.ता. 27.2.73, पृ.4 मध्य

m ''एडवांस पार्टी का कार्य चल रहा है। आप लोग के लिए सारी फील्ड तैयार करेंगे। उनके परिवार में जाओ, ना जाओ; लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिये वह निमित्त बनेंगे। कोई पावरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पावर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे।'' -अ.वा. 2.8.72, पृ.349 मध्य (फील्ड, परिवार व स्टेज ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं होता बल्कि इसी साकार सृष्टि पर होता है)।

m ''एडवांस का जो ग्रुप, उसमें भी जो वि ोश नामी–ग्रामी आत्मायें हैं उनका संगठन बहुत मजबूत है। (दिल्ली राजधानी में कृष्ण की प्रत्यक्षता रूपी दिव्य जन्म दिलाने के लिए) श्रेश्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म दिलाने के लिए धरनी तैयार करने का वंडरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्रगति से चल रहा है।'' -अ.वा. 18.1.80, पृ.222 अन्त

m ''एडवांस पार्टी में किसका पार्ट है वह दूसरी बात है। बाकी यह सीन देखना तो बहुत आव यक है। जिसने अन्त किया उसने सब कुछ किया। ...तो जाने का संकल्प नहीं करो। ... अकेले जायेंगे तो भी एडवांस पार्टी में सेवा करनी पड़ेगी। इसलिए जाना है यह नहीं सोचो, सबको साथ ले जाना है यह सोचो।'' -अ.वा. 26.11.84, पृ.32 अन्त

m ''वह (एडवांस पार्टी) भी अपना संगठन मजबूत बना रहे हैं। उन्हों का कार्य भी आप लोगों के साथ–2 प्रत्यक्ष होता जायेगा। अभी तो सम्बंध और दे ा के समीप हैं इसलिए छोटे–2 ग्रुप उन्हौं में भी कारणे अकारणे आपस में न चाहते हुए भी मिलते रहते हैं।...कर्मणा वाले भी गये हैं, राज्य स्थापना करने की प्लैनिंग बुद्धि वाले भी गये हैं। साथ–2 हिम्मत, हुल्लास बढ़ाने वाले भी गये हैं। ...ग्रुप तो अच्छा बन रहा है; लेकिन दोनों ग्रुप साथ–2 प्रत्यक्ष होंगे। वह (एडवांस) पार्टी भी अपनी तैयारी खूब कर रही है। जैसे आप लोग यूथ रैली का प्लान बना रहे हो ना, तो वह भी यूथ है अभी।...अंदर तो बहुत जो ा है; लेकिन बाहर से कुछ कर नहीं सकते हैं, यह भी एक स्थापना के राज में सहयोग का पार्ट है। ...अभी स्थापना की गुह्य रीति–रसम स्पश्ट होने का समय समीप आ रहा है। फिर आप लोगों को पता पड़ेगा कि एडवांस पार्टी क्या कर रही है और हम क्या कर रहे हैं। अभी आप भी क्वे चन करते हो कि वह क्या कर रहे हैं और वह भी क्वे चन करते हैं कि यह क्या कर रहे हैं! लेकिन दोनों ही ड्रामा अनुसार बढ़ रहे हैं।'' -अ.वा. 18.1.85, पृ.133 मध्य, पृ.134 आदि

m ''एडवांस पार्टी पूछ रही थी कि अभी हम तो एडवांस का कार्य कर रहे हैं; लेकिन हमारे साथी हमारे कार्य में वि ोश क्या सहयोग दे रहे हैं? वह भी माला बना रहे हैं। कौनसी माला बना रहे हैं? कहाँ–2, किस–2 का नई दुनियाँ के आरम्भ करने का जन्म होगा वह नि चत हो रहा है। उन्हों को भी अपने कार्य में वि ोश सहयोग सूक्ष्म भाक्ति ााली मंसा का चाहिए। जो भाक्ति ााली स्थापना के निमित्त बनने वाली आत्मायें हैं वह भल पावन हैं; लेकिन वायुमंडल व्यक्तियों का, प्रकृति का तमोगुणी है। अति तमोगुणी के बीच अल्प सतोगुणी आत्माएं कमलपुश्प समान हैं। ...एडवांस पार्टी वाले कोई स्वयं श्रेश्ठ आत्माओं का आवाहन करने के लिए तैयार हुए हैं और हो रहे हैं, कोई तैयार कराने में लगे हुए हैं। उन्हों का सेवा का साधन है– मित्रता और समीप के सम्बंध।'' -अ.वा. 18.1.86, पृ.164 मध्य, पृ.165 अन्त

m ''तुम बच्चों का संकल्प है ना कि मम्मा कहाँ है? एडवांस पार्टी क्या कर रही है? कैसे परिवर्तन होगा? तो बाबा ने कहा देखो जब किसी एक दे ा को जीतना होता है तो गुप्त ही गुप्त सारे दे ा में घेराव डाल लेते हैं और फिर जब चारों तरफ घेराव पड़ जाता है तो दे ा को जीतना सहज हो जाता है। उसी तरह यह वि व परिवर्तन की बात है। वि व परिवर्तन के लिए सिर्फ भारत में ही नहीं; लेकिन चारों तरफ एडवांस पार्टी का घेराव जब पक्का हो जायेगा

तब वि व का परिवर्तन होगा और फिर जो कार्य अभी गुप्त कर रहे हैं वह प्रत्यक्ष हो जायेगा। ...तो बाबा ने कहा अभी चारों ओर बाबा एडवांस पार्टी को भेज रहा और घेराव डाल रहा है। आप देखेंगे चारों तरफ जब दुनियाँ घिर जायेगी और सब अपने–2 हथियार डाल देंगे कि अब हमारे बस की बात नहीं है तब एडवांस पार्टी अपना काम करेगी। ...आगे चल देखेंगे कि कैसे छोटे–2 बच्चे भी बड़ों को राय, सलाह देते हैं। यह भी जैसे एक चक्रव्यूह बन रहा है। जिस चक्रव्यूह के अंदर लोग फंसेंगे और फिर कैसे निकलेंगे। ...यह सीन भी आगे चलकर देखेंगे।'' -अव्यक्त संदे ा ता. 26.6.86, पृ.2 मध्य

अव्यक्त वाणियों के उपरोक्त सभी महावाक्यों तथा बाबा की साकार मुरलियों के मनन–चिंतन–मंथन से यह गुह्य राज़ स्पश्ट होता है कि एडवांस पार्टी में तीन प्रकार के ग्रुप बाबा ने बताये हैं,

i) lykfux ikVh– यज्ञ के आदि में प्रजापिता और गीता माता के रूप में ज्ञान का बीजारोपण करने वाली राम–सीता की आत्माएं साकार भारीर परिवर्तन कर एडवासं पार्टी में हेड्स के रूप में सन् 76 से प्रत्यक्ष होती हैं। जिनके लिए मु.ता. 27.2.73, पृ.4 / 17.10.00, पृ.3 के मध्य में बोला है,''रिसीव करने के लिए भी टाइम चाहिए ना। माँ–बाप तो पहले जाने चाहिए।'' तो ये राम–सीता और उनके ग्रुप की आत्माएं तीक्ष्ण बुद्धि होने के कारण नई दुनियाँ स्वर्ग की स्थापना का सारा प्लान सेट करती हैं। कैसे स्वर्ग स्थापन होगा; कहाँ–2, किस–2 का नई दुनियाँ के आरम्भ करने का जन्म होगा आदि सारा प्लान उनकी बुद्धि में तैयार होता रहता है।

ii)इन्सपिरेटिंग पार्टी– उमंग–उत्साह दिलाने वाली, प्रेरित करने वाली आत्माएं जो अन्तःवाहक भारीर द्वारा याने सूक्ष्म भारीर द्वारा सेवा करती हैं। जैसे मम्मा–बाबा, मनमोहिनी दीदी, वि वकि ाोर भाÅ आदि की आत्माएं समय–2 पर बच्चों में प्रवे ा कर उनको सेवा के लिए उमंग–उत्साह दिलाती हैं, प्रेरित करती हैं। मुरली में भी बाबा ने बोला है, m ''मम्मा का भल भारीर नहीं है तो भी पुरुशार्थ करती रहती है, सर्विस पर जाती है। बच्चों के तन में विराजमान हो पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताती है।''(मु.ता. 22.7.72, पृ.2 आदि)। m''यह मुकर्रर तन है। दूसरे कोई में कब आते ही नहीं। हाँ ,बच्चों में कब मम्मा कब बाबा आ सकते हैं मदद करने के लिए।''(मु.ता.8.1.75, पृ.2 अन्त)

iii) ifDVdy ikVh– ऐसी प्योरिटी की पावर धारण करने वाली आत्माओं का ग्रुप जो पवित्रता और योगबल के द्वारा नई सतयुगी सृष्टि में कृष्ण जैसे सतोप्रधान बच्चों को जन्म देने के लिए योगबल से गर्भमहल तैयार करने का प्रैक्टिकल पुरुशार्थ करती है।

तो एडवांस पार्टी कोई ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं है और ना ही ऊपर में कोई ऐसी सूक्ष्म भारीरधारी आत्माओं का संगठन है। ''अ.वा.ता. 15.9.74, पृ.131 के मध्य में बोला है, ''बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।'' इस महावाक्य का अर्थ भी कथित ब्राह्मण उल्टा लगा लेते हैं। समझते हैं कि ब्रह्मा (दादा लेखराज) जो साकार था वो आकारी सूक्ष्मवतन में चला गया है और वही फिर परमधाम में जाकर निराकारी तथा नये सतयुग में पुनः साकारी बनेगा; परंतु इस महावाक्य का यह अर्थ लगा लेना एकदम रांग है; क्योंकि पहली बात तो यही है कि ब्रह्मा का पार्ट बाप का नहीं बल्कि माँ का था। वो कृशण बच्चाबुद्धि वाली आत्मा है। तीक्ष्ण बुद्धि वाली राम बाप की आत्मा नहीं है। दूसरी बात मुरलियों में, अव्यक्तवाणियों में कहीं भी ऐसी ि ाक्षा नहीं दी गई है कि बच्चों को भारीर छोड़कर ऊपर सूक्ष्मवतन या मूलवतन में जाकर आकारी व निराकारी बनना है। बाबा ने तो डायरैक् ान दिया है कि तुम बच्चे भारीर में रहते हुए भी घड़ी–2 साकारी से आकारी व निराकारी बनने की प्रैक्टिस करो। भारीर में होते हुए भी आत्मा की ऐसी स्टेज हो जाय कि बुद्धि में देह और देह के सर्व सम्बंध भूल जाय; केवल ज्ञान में ही बुद्धि रमण करती रहे वो हो गई फरि ता की स्टेज। तो ऐसी फरि ताई आकारी स्टेज वाली आत्माएं अर्थात् एडवांस पार्टी कोई ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं है जैसा कि बी.के. समझते हैं।

सन् 1969 में जब ब्रह्मा (दादा लेखराज) का भारीर छूटा तो उनकी आत्मा कोई ऊपर सूक्ष्मवतन में नहीं चली गई। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा जिसे संदे ि ायाँ ध्यान में देखती हैं वह कोई

ऊपर में नहीं है। वो ब्रह्मा तो यहीं इसी साकार सृश्टि पर हम नम्बरवार बच्चों में प्रवे ा कर सर्विस करते हैं। इसी साकार सृश्टि पर ही कोई ऐसे वि ोश ब्राह्मण बच्चे हैं जो साकार भारीर में रहते हुए भी अपनी ऐसी आकारी स्टेज बना लेते हैं कि उनके इस आकारी स्टेज के संगठन को 'सूक्ष्मवतन' या 'एडवांस पार्टी' समझ लिया जाता है। इसलिए बाबा ने मुरलियों में सूक्ष्मवतन को कट कर दिया है। तो यह महावाक्य राम वाली आत्मा के लिए साबित होता है; क्योंकि यज्ञ के आदि में जो राम बाप प्रजापिता के रूप में साकारी था वही पुनर्जन्म के प चात 1969 में जब ज्ञान में आता है तो ब्रह्मा की आत्मा और परमपिता ि ाव की आत्मा उनमें प्रवे ा कर जाती है और महादेव भांकर के रूप में उसकी आकारी स्टेज बन जाती है। उसकी बुद्धि में ज्ञान घुमड़ने लग जाता है। ज्ञान का मनन, चिंतन, मंथन चलने लग पड़ता है। भास्त्रों में जो गायन है ' ांकर की जटाओं में गंगा समाई' और 'सागर मंथन हुआ' वह भी इसी अर्थ में है। तो प्रजापिता (राम बाप) जो यज्ञ के आदि में साकार था वही फिर 1969 से 1976 के बीच आकारी बन गया। वह देह और देह के सर्व सम्बंधों को लौकिक से अलौकिक में परिवर्तित करने वाला बन गया। फिर आकारी से वो निराकारी बन गया। निराकारी अर्थात् निःसंकल्प स्टेज। उस आत्मा को अपने पार्ट का, अपने स्वरूप का पक्का नि चय हो गया कि मैं कौन? तो वह नि चय–अनि चय रूपी जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त हो गया याने अमरनाथ (ांकर) की स्टेज पर सेट हो गया।

29. xqYtkj nknh esa f'kockck ugha vkrs

तथाकथित ब्राह्मण समझते हैं कि गुल्जार दादी के तन में सुप्रीम सोल ि ावबाबा प्रवे ा कर पार्ट बजा रहे हैं; परंतु उनका ऐसा समझना भ्रामक है; क्योंकि मुरलियों और अव्यक्तवाणियों से सिद्ध होता है कि गुल्जार दादी के तन में सिर्फ ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल बीच–2 में पार्ट बजाती है; लेकिन यह बात भी उन्हीं ब्राह्मणों की समझ में आवेगी जो बाबा की मुरलियों पर दृढ़ नि चय, श्रद्धा, वि वास और भावना रखते हैं, मुरलियों के महावाक्यों पर विचार, सागर, मंथन करते हैं। जो ब्राह्मण केवल अंधश्रद्धा से ज्ञान में चल रहे हैं उनकी बुद्धि इस सच्चाई को पकड़ नहीं सकती। मुरलियों में इसके सैकड़ों प्रमाण मौजूद हैं। जैसे,

m ि ावबाबा का दिव्य जन्म अर्थात् दिव्य प्रवे ा होता है। याने ि ावबाबा जिस तन में प्रवे ा करते हैं उस व्यक्ति को अपनी स्मृति रहती है। उसके कान सबसे पहले ि ावबाबा की मुरली सुनते हैं। जैसे ब्रह्मा बाबा। जबकि गुल्जार दादी को अपनी स्मृति नहीं रहती; क्योंकि ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म भारीर के दबाव से उनकी आत्मा गुम हो जाती है। उन्हें बाद में छपी हुई मुरली पढ़नी पड़ती है। मु.ता. 7.2.68, पृ.1 आदि में इसका प्रमाण देखें, ''बाबा ही समझाते हैं जिसमें प्रवे ा किया हैं वह भी सुनते हैं।''

m ब्रह्मा बाबा में ि ावबाबा की प्रवे ाता का पता नहीं पड़ता था जबकि गुल्जार दादी में जब ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल प्रवे ा करती है तो सबको पता पड़ जाता हैं। मु.ता. 26.1.68, पृ.1 आदि का प्रूफ देखें, ''बाप खुद कहते हैं मैं जब आता हूँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता है; क्योंकि है गुप्त। तुम बच्चे भी हो गुप्त। ...प्रवे ा कब किया, कब रथ में पधारा मालूम नहीं पड़ता है।''

m ि ावबाबा पतित तन में आता है। कामी कांटे में प्रवे ा करते हैं। जबकि गुल्जार दादी को कामी कांटा नहीं कह सकते; क्योंकि वह तो घर–ग हस्थी की कीचड़ से भी दूर आश्रम में पवित्र वातावरण में पली है। इसलिए मु.ता. 15.10.69, पृ.2 मध्य में बाबा ने बोला है, ''(ि ावबाबा) इतना ऊँच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र ऋशि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही है सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवें; परंतु कायदा नहीं हैं। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे?'' क्योंकि बाप तो नम्बरवन कांटे में प्रवे ा कर उसे नम्बरवन फूल किंग फ्लावर बनाते हैं। मु.ता. 26.2.74, पृ.2 के अन्त में बोला हैं, ''एकदम (कामी) कांटे में बैठ ि ाक्षा देते हैं। प्रवे ा भी कांटो में किया हैं। नम्बरवन कांटे में आकर उनको नम्बरवन फूल बनाता हूँ।'' (तो सन् 1969 के बाद से नम्बरवन कांटा कौन है?)

m ज्ञान को प्रैक्टिकल जीवन में धारण करने वाली ब्रह्मा बाबा की आत्मा गुल्जार संदे ाी के मुख से धारणाओं की ही बातें सुनाती है। जबकि ज्ञान सागर सुप्रीम सोल की मुरली में ज्ञान के गुह्य राज हैं, परिवर्तन का जादू है। अ.वा. 21.1.69, पृ.20 के अन्त में इसका स्पश्ट प्रमाण है, ''जो ब्रह्मा का तन मुकर्रर है तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है वही मुरली है और संदे ायों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं उनको मुरली नहीं कहा जाता है। उस मुरली में जादू नहीं है। बापदादा की मुरली में ही जादू है। इसलिए जो भी मुरलियां चल चुकीं हैं वह सभी रिवाइज़ करनी हैं।'' (स्पश्ट है कि गुल्जार दादी भी संदे ाी है। उनके द्वारा अव्यक्त बापदादा भाब्द का उच्चारण भी इसलिए किया जाता है कि हम बच्चों के मुकाबले ब्रह्मा बाबा बुद्धियोग से सदा ि ावबाबा के साथ हैं)।

m''ऐसे नहीं बाबा का आवाहन करते हैं। नहीं, बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते। बाबा को आपे ही आना है।'' -मु.ता. 14.4.76, पृ.1 आदि (जबकि गुल्जार दादी में आवाहन करते हैं। पहले से ही डेट फिक्स हो जाती है)।

m''ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवे ा करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ...अगर वह दूसरे में आवे तो तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।''-मु.ता. 17.3.73/8.3.83, पृ.2 अन्त (अब गुल्जार दादी को तो कोई ब्रह्मा नहीं कहता।)

m''लाउडस्पीकर पर कब पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे? लाउडस्पीकर पर रेसपांड कैसे दे सकेंगे? इसलिए थोड़े-2 स्टुडेंट को पढाते हैं।'' -मु.ता. 24.1.71/2.10.01, पृ.3 अन्त (साबित होता है कि जब गुल्जार में प्रवे ाता होती है तो वे माइक पर बोलती हैं तथा सुनने वालों का बहुत बड़ा हुजूम वहाँ इकट्ठा होता है। कोई सवाल, जवाब नहीं होते और न ही मुरलियों का गूढ़ अर्थ समझाने वाले बाप, टीचर, व सद्गुरू का पार्ट चलता है)।

30. xYtkj ru e cgek dh io'krk D;k\

अब प्र न उठता है कि जब गुल्जार दादी में ि ावबाबा प्रवे ा नहीं करते तो ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल भी क्यों प्रवे ा करती है? बाबा का गुल्जार बच्ची के बचपन से ही वि ोश स्नेह था ;परंतु वो बाबा के पास आती ही नहीं थी। भाग जाती थी। भारीर छोड़ने के बाद वो लगाव बना रहा इसलिए सूक्ष्म भारीर से उस लगाव की पूर्ति हो रही है। इसके अलावा दूसरा कारण यह है कि ब्रह्मा के थ्रू यज्ञ की पालना हुई। भल बच्चों की आसुरी चलन से उनका हार्टफेल हो गया; लेकिन अंत तक भी बच्चों को सुधारने का, उनका कल्याण करने का भाुभ संकल्प ब्रह्मा बाबा की मन-बुद्धि रूपी आत्मा में रहा। माँ का पार्ट होने के कारण बच्चों के प्रति उनका भाुद्ध मोह भी है ही। जो बच्चे ि ावबाबा के लवफुल पार्ट से नहीं सुधरे उनको 'आर' अर्थात् अरई/चेतावनी देने वाले अव्यक्त बापदादा के इस पार्ट की भी जरूरत थी। यही कारण है कि बीच-2 में ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल गुल्जार दादी के तन से बच्चों को धारणावान बनाने की तथा अपनी चलन सुधारने की चेतावनी देने का पार्ट चला रही है; लेकिन जैसा कहा जाता है कि प्यार, आर और मार में से अंत में 'मार' याने सजा (दंड) की नीति अपनानी पड़ती है। कहते हैं 'मार के आगे भूत भी भाग जाते हैं'। तो यहाँ भी जो बच्चे प्यार व आर की मीठी संतुलित भाशा नहीं समझे उनके लिए फिर बाप को धर्मराज के रूप में प्रलयंकारी पार्ट बजाने के लिए इनएडवांस तैयार होना पड़ता है। अ.वा.ता. 22.10.70, पृ.310 के अन्त में भी चेतावनी दी है कि ''अभी थोड़े समय के अन्दर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे; क्योंकि अब अंतिम समय है।'' उन बच्चों को भी बाबा ने सावधान किया है जो यह समझते हैं कि ऊपर में कहीं कोई सूक्ष्मवतन है जहाँ सजायें मिलेंगी। जबकि ता. 15.9.90 व 4. 10.73, पृ.2 की रिवाइज मुरली में कहा है ''सजायें भी सभी को इसी दुनियाँ में खानी पड़ेंगी। साकार भारीर धारण कराके सजायें देंगे।'' बाबा ने बोला भी है कि ''महाकाल को बुलाते हैं महाविना ा के लिए।'' कितनी ढेर आत्मायें जायेंगी। (संकल्पों की) सजायें खा-2 कर जैसे पिसती हैं। बाबा ने सजाओं का भी साक्षात्कार कराया। कोई तो निमित्त बनेगा ना। उनके एवज में उनके बहुत पाप कट जाते हैं। तो महाकाल का पार्ट बजाने के लिए राम की आत्मा भांकर

के रूप में अपना तन, मन, धन (सर्वस्व) बाप–दादा (ि ाव–ब्रह्मा) को अर्पण करने के निमित्त बनती है।

31. i:tkfirk ifrr ;k ikou

अक्सर करके ब्राह्मण बच्चों को यह गलतफहमी हो जाती है कि ि ाव बाप जिस तन में आए हैं वह तो पावन होना चाहिए; लेकिन प्र न यह है कि क्या 500 करोड़ प्रजा पतित है अथवा पावन है? जरूर पतित ही है, तो प्रजापिता का पार्टधारी भी पतित ही है।'' ता. 26.2.74, पृ.2 की मु. के अन्त में बोला है, ''एकदम काँटो को बैठ ि ाक्षा देते हैं। प्रवे ा भी काँटे में किया है। तो काँटों पर भी प्यार है ना तब तो उनको फूल बनाते हैं। ...नम्बरवन काँटे में मैं आकर उनको नम्बरवन फूल बनाता हूँ।'' जैसे कि कहावत भी है 'लोहे से लोहा काटा जाता है।' 'विश से विश मारा जाता है।' 'काँटे से काँटा निकाला जाता है।' तो बाप भी काँटों को सुधारने के लिए (बड़े से बड़े कांटे में) प्रवे ा करते हैं। कृष्ण (ब्रह्मा) की आत्मा बड़े से बड़ा काँटा नहीं है; क्योंकि वह न ज्यादा सतोप्रधान बनती है और न ज्यादा तमोप्रधान बनती है। जबकि राम की आत्मा आलराउंड पार्टधारी होने के कारण सबसे ज्यादा सतोप्रधान और सबसे ज्यादा तमोप्रधान बनती है। इसलिए राम को चित्रों में काला ही दिखाया जाता है। यह भी संगमयुग की ही यादगार है। राम का प्रजापिता के रूप में जो पार्ट है वह भी तो मनुश्य ही है। भल तीव्र पुरुशार्थी है जो कि एक सेकेंड में टॉप मोस्ट ि ाखर पर और एक सेकेंड में पांचवीं मंज़िल से एकदम नीचे पहुँचने की क्षमता रखता है। जैसे कोई नाविक होता है उसको ट्रेनिंग दी जाती है कि कहीं जरूरत पड़े तो गिरे हुए को उठा के लावे। तो ऐसे ही राम वाली आत्मा का यह वि ोश पार्ट है। ...'खट से डाउन और खट से अप' याने एक सेकेंड में ब्रह्मा सो विश्णु बनने का (बाकी अन्य आत्माएं नम्बरवार हैं), तो प्रजापिता (ंकर) का पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो कि दुनियाँ वालों की समझ में सहज ही नहीं आ सकता; क्योंकि उसमें एक ही ारीर में तीन आत्माएं पार्ट बजा रही हैं। एवर प्योर ि ाव–ब्रह्मा–राम बाप। अब जिन बच्चों ने उस पार्ट को पहचाना है उनकी दृष्टि के ऊपर है कि वे किससे प्राप्ति करना चाहते हैं। प्रजापिता से प्राप्ति करना चाहते हैं जो पतित है या उसमें आये हुए एवर प्योर सुप्रीम सोल ि ाव बाप से प्राप्ति करना चाहते हैं? वे किसको देखते हैं? पतित को देखते या पावन को देखते? जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। तो प्रजापिता का कार्य तो तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक दुनियाँ की 500 करोड़वीं आत्मा भी पावन बन परमधाम जाने की स्टेज पर न पहुँच जाए तब 'सर्व का सदगति दाता राम' कहा जावेगा।

32. jke cki dgk tkrk g] d".k cki ugh

m ''बाप जिसको भारतवासी राम भी कहते हैं; परंतु यथार्थ रीति न जानने के कारण राम त्रेता वाले को समझ लेते हैं। वास्तव में उनकी तो बात ही नहीं।'' -मु.ता.10.2.75, पृ.1 आदि (संगमयुग की बात है; क्योंकि संगमयुग पर ही निराकार राम ि ाव साकार राम प्रजापिता में प्रवे ा करते हैं)।

m ''सर्व ाक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं।'' -मु.ता. 20.2.74, पृ.3 आदि

m ''स्वर्ग का वर्सा बाप ही आकर देते हैं। पुकारते भी उनको हैं, हे राम! हे भगवान!''

m ''वास्तव में राम भी परमपिता परमात्मा को कहते हैं।'' -मु.ता. 26.7.63, पृ.2

m ''राम कहा जाता है ि ावबाबा को; परंतु उन्होंने परमात्मा को समझ लिया है। -मु.ता.14.4.76 पृ.1

m ''प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है उनको ग्रेट–2 ग्रैंड फादर कहा जाता है। मनुश्य सृष्टि में प्रजापिता हुआ।'' -मु.ता. 6.2.76, पृ.1 मध्य / 13.2.86, अंत

m ''ि ावबाबा आया हुआ है। रामनवमी मनाते हैं। जरूर आया था, राज्य करके गया था। तो उनका दिवस मनाते हैं। पहले तो रचयिता ि ावबाबा आया होगा तब ही स्वर्ग की रचना रची

होगी। उनके बाद राम का राज्य चला।'' -मु.ता. 6.4.73, पृ.1 मध्य। (विचार–सागर–मंथन कर महावाक्य के गुह्य अर्थ को समझे कि ि ावबाबा का रामनवमी से क्या सम्बंध है?)

m ''रावण कोई बलवान नहीं है। राम बलवान है तो रावण भी बलवान है; क्योंकि दोनों ही आधा–2 कल्प राज्य करते हैं।'' -मु.ता. 4.4.72, पृ.1 आदि
(विचार करें कि क्या रुहानी बाप ि ाव आधा कल्प राज्य करते हैं? यदि नही ंतो किस राम की बात है?)

m ''राम अर्थात् ई वर और रावण दोनों का चित्र इकट्ठा करना चाहिये। फिर दिखाओ कि यह राम है, यह रावण है। यह स्वर्ग बनाते हैं, यह फिर नर्क बना देते हैं।'' -मु.ता. 2.9.69, पृ.2 आदि (चित्र साकार का होता है, निराकार का नहीं।)

m ''मनुश्य को क्या पता राम आया हुआ है। आवेंगे भी गुप्त वेश में। बाप कहते हैं जिन्होंने कल्प पहले भी न पहचाना है वह कभी नहीं पहचानेंगे।'' -मु.ता. 1.2.71, पृ.4 मध्य

33. jke er l; jke jkT;

m ''राम मत से तुमने राज्य लिया है। रावण मत से गंवाया है। अभी फिर ऊपर चढ़ने के लिए तुमको राम मत मिलती है।'' -मु.ता. 6.6.74, पृ.3 मध्य

m ''इस समय तुम आत्मायें राम ि ावबाबा श्री–2 की श्रीमत पर चलती हो।'' -मु.ता. 2.3.78, पृ. 2 आदि/20.2.83, मध्य

m ''राम राज्य राम द्वारा ही मिलता है। सतयुग से राम राज्य भ्ाुरू होता है।'' -मु.ता.17.7.72, पृ. 1 अन्त

m ''अभी तुम बच्चों को ई वरीय मत मिलती है, जिसको राम मत कहा जाता है।''(कृष्ण मत नहीं) -मु.ता. 24.5.74 एवं 15.8.74

m ''राम राज्य स्थापन करने के लिए तो बेहद का बापूजी चाहिए जो राम राज्य की स्थापना और रावण राज्य का विना ा करे।'' -मु.ता. 6.7.71, पृ.1 मध्य (बेहद का बापूजी तो इसी साकार सृष्टि पर चाहिए ना)

m ''अगर राम राज्य में चलना है तो राम की मत पर चलो।'' -मु.ता.12.5.77, पृ.3 आदि

m ''अब राम ि ावबाबा मत देते हैं। नि चय में ही विजय है।''-मु.ता.8.12.74, पृ.2 मध्य

34. rhljh nqfu;k

जब राम वाली आत्मा के द्वारा राजधानी स्थापन हो जाती है तब जो सृष्टि की बीजरूप आत्माएं हैं वो एक प्रकार से तीसरी दुनियाँ कही जाती हैं। 'पहली दुनियाँ' तो वो दुनियाँ है जहाँ से निकलकर बेसिक ज्ञान में आगमन होता है, याने 500 करोड़ की बेहद की दुनियाँ। फिर जब हमें ब्रह्माकुमारियों से बेसिक ज्ञान मिल जाता है तो वो हो गई आधारमूर्त ब्राह्मणों की दूसरी दुनियाँ। फिर जब एडवांस नालेज ली तो ये हो गई तीसरी दुनियाँ। ये जो तीसरी दुनियाँ है वो 108 बीजरूप आत्माओं की छोटी दुनियाँ है। इन 108 बीजरूप आत्माओं में सारे संसार के हर धर्म के अविना ी बीज समाये हुए हैं। अच्छे ते अच्छे पार्टधारी और बुरे ते बुरे पार्टधारी भी इस रुद्रमाला में समाये हुए हैं। इन बीजों के अंदर सारी दुनियाँ का द न, सारी दुनियाँ के चरित्रों का अध्ययन कर सकते हैं। तीसरी दुनियाँ के ये 108 बीजरूप मणके मनसा, वाचा, कर्मणा, समय, सम्पर्क से, तन से व धन से एकजुट होकर के एक स्वर से उस बाप प्रजापिता को वि वपिता के रूप में स्वीकार कर लेते हैं तो वह सारी दुनियाँ का पिता एडम या आदम साबित हो जाता है। अ.वा.ता. 24.12.78, पृ.159–61 के मध्य में बोला है, ''लास्ट बाम्ब अर्थात् परमात्म बाम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं। ...डायरैक्ट ऑलमाइटी अथॉर्टी का कर्तव्य चल रहा है। ...सिखाने वाला डायरैक्ट आलमाइटी है। ...इस अंतिम बाम्ब द्वारा... हरेक के बीच बाप

प्रत्यक्ष होगा। वि व में वि वपिता स्पश्ट दिखाई देगा।'' (स्पश्ट तो तभी दिखाई देगा जब वि वपिता साकार में हो)।

35. ifrr&ikou lhrk jke

पतित–पावन राधा–कृष्ण, पतित–पावन ब्रह्मा–सरस्वती, पतित–पावन लक्ष्मी–नारायण नहीं कहा जाता है। गायन है 'पतित–पावन सीता राम।' ता. 25.10.78 की मु. में बोला है, ''उनको ही पतित–पावन कहा जाता है। गाते भी ऐसे ही हैं, हे पतित–पावन सीता–राम! सन्यासी लोग भी जहाँ–तहाँ धुन लगाते रहते हैं।'' तो जरूर सृष्टि के उद्धार का कार्य अंत तक राम और सीता वाली आत्माओं के द्वारा ही सम्पन्न होता है। इसलिए 'राम राज्य' का गायन है। कृष्ण राज्य, नारायण राज्य या ि ाव राज्य का गायन नहीं है। ि ाव तो वि व का मालिक बनते ही नहीं। वि व का मालिक जो बनता है वो बच्चों को भी मालिक बना सकता है। इसलिए मु.ता. 29.7.78, पृ.2 के अन्त में बोला है, ''पतितों को पावन करने वाला भी वह है, जगत का मालिक भी वह है।'' मु.ता. 17.7.72, पृ.1 के अन्त में बोला है ''राम राज्य राम द्वारा ही मिलता है। सतयुग से राम राज्य भाुरू होता है।'' तो परमपिता परमात्मा ि ाव ही राम के द्वारा हम बच्चों को वि व का मालिक बनाते हैं। अनेकों मुरलियों में बाबा ने इस गुह्य राज को स्पश्ट किया है।

m ''गाते भी हैं सर्व का सदगति दाता राम; परंतु बंदर बुद्धि होने के कारण समझते नहीं कि राम किसको कहा जाता है। कहते हैं जिधर देखो राम ही राम रमता है। अभी (संगम पर) रमते तो मनुश्य हैं ना। तो इसको कहा जाता है अज्ञान अन्धियारा।'' -मु.ता. 11.3.75, पृ.1 अन्त

m ''बाप को करनकरावनहार पतित–पावन कहते हैं तो जरूर यहाँ (सृष्टि पर) आवेंगे न। पतितों को पावन कोई प्रेरणा से थोड़े ही बनावेंगे। जरूर यहाँ आना पड़े।'' -मु.ता. 24.2.74, पृ. 2 अन्त

m ''ि ावबाबा पार्ट न बजावे फिर तो कोई काम का न रहा। वैल्यु ही न होती। उनकी वैल्यु ही तब होती है जब कि सारी दुनियाँ को सदगति में पहुँचाते हैं। तब उनकी महिमा होती है। भक्तिमार्ग में गाते हैं।''-मु.ता. 16.12.74, पृ.1 अन्त (मुरलियों में बोला है निराकार राम और साकार राम के मेल को बाबा कहा जाता है। तो निराकार बाप ि ाव जिस साकार तन में प्रवे ा कर ि ावबाबा बनते हैं वह साकार तन राम वाली आत्मा का संगमयुगी तन है। तो जिस रूप [तन] के द्वारा सर्व की सदगति होती है उसका ही गायन होता है 'सर्व का सदगति दाता राम')।

m ''जबकि इनको सबकी सदगति करने आना ही है तो जरूर किस रूप में आवेंगे ना। घर बैठे इनको आना है।'' -मु.ता. 6.7.77, पृ.2 अन्त

m ''एक ही बाप बैठ सभी को पावन बनाते हैं। एक पावन बनने से सब पावन बन जाते हैं। एक पतित तो सब पतित बन जाते हैं।'' -मु.ता. 21.3.74, पृ.3 आदि (तो वह एक ही है राम बाप)।

m ''बाप पतित–पावन आते हैं तो सारी दुनियाँ के मनुश्य मात्र तो क्या प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाते हैं। अभी प्रकृति तमोप्रधान है।'' -मु.ता. 20.1.75, पृ.2 मध्य

m ''बाप कहते हैं मैं सभी धर्मों का सर्वेंट हूँ। आकर सबको सदगति देता हूँ। सदगति कहा जाता है सतयुग को।'' -मु.ता. 28.3.74, पृ.2 आदि

m ''पतित–पावन बाप के सिवाय न कोई पावन निराकारी दुनियाँ में जा सकते, न पावन साकारी दुनियाँ में आ सकते।'' -मु.ता. 19.4.78, पृ.2 मध्य (रुहानी बाप ि ाव तो पावन दुनियाँ में आते ही नहीं। तो यह बात जरूर राम बाप के लिए कही गई है)।

m ''पतितों को पावन बनाने का पार्ट ही यहां है।................तो समझना चाहिए वह पतित–पावन ,ज्ञान का सागर रोज अमृतवेले परमधाम से आते हैं पढ़ाने।........सारे वि व को सदगति देने के लिए बाप को परमधाम से आना पड़ा।''ता.27.6.71पृ.1(अभी न तो पढ़ाई पूरी हुई है और न सारे वि व की सदगति। फिर बाप रोज अमृतवेले किस स्थान पर और किस तन में आकर पढ़ाइ पढ़ा रहे हैं व पावन बनने की युक्ति बता रहे हें यही रहस्य इस पुस्तक में स्पश्ट किया गया है।)

m ''पतित–पावन बाप आकर जब पावन बनावें तब हम जा सकते हैं। अब बाप तुम बच्चों को पावन बनने की युक्ति बता रहे हैं।'' -मु.ता. 1.11.71, पृ.3 (ब्रह्मा बाबा के द्वारा पावन बनने की युक्ति नहीं बताई गई; क्योंकि उनका पतित–पावन बाप का पार्ट नहीं था। उनका तो माता का पार्ट था। उनके द्वारा केवल ज्ञान निकला। ज्ञान का गुह्य रहस्य बताने वाले सत् ि क्षक का पार्ट तो राम बाप के द्वारा सन् 76 से आरम्भ होता है। पावन बनने की युक्ति भी बाप अभी बता रहे हैं)

m ''पुकारती हैं 'हे पतित–पावन आओ'। तो जरूर उनको रथ चाहिए ना जिसमें आकर पावन बनावे। ज्ञान के बाण से तो पावन नहीं बनेंगे।'' -मु.ता. 30.5.70, पृ.2 आदि (तो वह रथ वही हो सकता है जिसका गायन होता ह`'सर्व का सदगति दाता राम')।

36. cki dk uke] :Ik] ns'k] dky

बाबा ने मुरलियों में जहाँ एक ओर सामान्य ज्ञान दिया है वहीं दूसरी ओर उन्हीं मुरलियों में वि ोश ज्ञान अर्थात् एडवांस नालेज भी दिया है; लेकिन पहले सामान्य ज्ञान ही अगर कोई ब्राह्मण न समझे तो वह वि ोश ज्ञान तक कैसे पहुँच सकता है? प्राइमरी नालेज के बतौर त्रिमूर्ति के चित्र में भांकर की मूर्ति के लिए बाबा ने मु.ता. 5.4.67 (रात्रि क्लास) में बोला है, ''बाप का परिचय जब तक नहीं है तब तक और बातें फाल्तू हैं।'' तो पहले तथाकथित ब्राह्मणों को यह बात समझाई जाये कि वे भांकर के पार्ट को तथा भांकर के अस्तित्व को स्वीकार करें। यह है पहली स्टेज याने प्राइमरी नालेज। यदि वे भांकर के पार्ट को,   ंकर के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं तो उन्हें आगे समझाने से कोई फायदा नहीं। यदि वे भांकर के पार्ट को स्वीकार करें तब उन्हें आगे भी एडवांस नालेज के बारे में बताना चाहिए कि मुरलियों में व अव्यक्त वाणियों में ऐसे सैकड़ों महावाक्य हैं जिनसे बाप के उस वंडरफुल पार्ट की पहचान व उसका अस्तित्व इसी साकार सृश्टि पर सिद्ध होता है। जैसे ता. 14.10.68 की मु. में बोला है, ''जो ऊपर में बाप को याद करते होंगे वह है भक्ति मार्ग; क्योंकि उन्हों को आक्युपे ान का पता नहीं। न उनके नाम, रूप, दे ा, काल का पता है।'' (नाम, रूप, दे ा, काल आदि सब इस साकार सृश्टि पर होते हैं। सूक्ष्मवतन या मूलवतन में नहीं।)

i) cki dk ykSfdd uke– जैसे कृष्ण की आत्मा 'ब्रह्मा' बाबा का लौकिक नाम उनके अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप 'लेखराज' अर्थात् भाग्य का लेखा लिखने वालों का राजा पहले से ही नि चत था ठीक वैसे ही 'राम' की आत्मा ' ंकर' का लौकिक नाम मायावी रावण और उसके सम्प्रदाय से युद्ध करने में महान वीरता के अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप पहले से ही नि चत होना चाहिए। महावीर को ही 'वीरों का राजा इन्द्रदेव' कहा जाता है। जिसके नाम पर बसाई गई 'इन्द्रप्रस्थ नगरी' और 'इन्द्र सभा' आज भी म ाहूर है। पाण्डवों की विख्यात राजधानी इन्द्रप्रस्थ माउन्ट आबू में नहीं बल्कि दिल्ली क्षेत्र में थी।

जैसे ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज) 'बडग' जाति के ब्राह्मण थे वैसे ही प्रजापिता (राम बाप) की आत्मा भांकर भी कुलीन ब्राह्मण वर्ग से है। सच्चे ब्राह्मणों की रक्षा के लिए ज्ञान यज्ञ रचने में 'दक्ष' अर्थात् 'दीक्षित' होने के कारण उसे भास्त्रों में 'दक्ष–प्रजा–पति' कह दिया है। पति का अर्थ ही है रक्षा करने वाला।

vykSfdd uke– जिस ब्राह्मण बच्चे के भारीर–रूपी रथ के द्वारा ि ावबाबा परमपिता के रूप में सारे वि व में विख्यात होते हैं, उसके प्रमुख अलौकिक नाम भांकर, महावीर, सोमनाथ, सनत्कुमार आदि हैं।

a) fo'oukFk 'kadj ;k lurRdqekj– मु.ता. 24.1.75, पृ.2 के मध्य में बाबा ने कहा है, ''उन (ि ाव) की आत्मा का ही नाम ि ाव है। वह कब बदलता नहीं। भारीर बदलते हैं तो नाम भी बदल जाते हैं।'' जैसे ब्रह्मा, भांकर आदि। मु.ता. 22.2.75/5.2.95, पृ.1 के आदि में बोला है, ''बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा, विश्णु, भांकर भी जरूर चाहिए। कहते भी हैं त्रिमूर्ति ि ाव भगवान उवाच। अब तीनों द्वारा (एक साथ) तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी हैं।'' मु.ता. 10.2.72, पृ.4 के अन्त में बोला है, ''गॉड इज वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देवी–देवताओं में बड़ा कौन? महादेव भांकर को कहते हैं।'' भारतीय परम्परा में बड़े बच्चे को ही पहले राजाई देने का प्रावधान है। मु.ता. 3.5.73, पृ.1 (रात्री क्लास) के मध्य में कहा है,''बड़े भाई को हमे ाा बाप समान समझते हैं। यह भी बड़ा है। जैसे मम्मा भी बड़ी है। यह सारा ज्ञान के ऊपर है। जिसमें अधिक ज्ञान है वह बड़ा ठहरा। भल भारीर में छोटा हो; परन्तु ज्ञान में तीखा है तो हम समझते हैं यह भविश्य पद में बड़ा (वि वनाथ) बनने वाला है। ऐसे बड़ों का फिर रिगार्ड भी रखना चाहिए; क्योकि ज्ञान में तीखे हैं।''

वि व में बड़ा अर्थात् महान बनने वाला महादेव भांकर ही वास्तव में ब्रह्मा का सबसे बड़ा पुत्र 'योगी वर सनतकुमार' कहा गया है; क्योंकि योगियों का ई वर तो एक ही होगा। एक के ही दो नाम दे दिये हैं। योगबल के आधार पर आदिदेव बनने वाले इसी सनतकुमार के आधार पर आदि सनातन देवता धर्म का नाम सार्थक होता है। धर्मपिता के नाम पर ही धर्म का नाम विख्यात होता है। जैसे क्राइस्ट से क्रि चयन, बुद्ध से बौद्ध धर्म आदि–2। ता. 18.3.71 की अ.वा. में ब्रह्मा के ज्येश्ठ पुत्र सनतकुमार का जिक्र आया है। वास्तव में ब्रह्मा–सरस्वती को आदिदेव और आदिदेवी नहीं कह सकते; क्योंकि सरस्वती ब्रह्मा की बेटी थी; परंतु वही ब्रह्मा–सरस्वती अपना पतित भारीर त्यागकर जब वि ोश ज्ञानी और योगी तू आत्मा भांकर–पार्वती में प्रवे ा करते हैं तो आदि देव और आदि देवी के नाम से संसार में प्रत्यक्ष होते हैं।

b) egkohj– वास्तविकता तो यह है कि जैन तीर्थंकर 'महावीर' और हिन्दुओं में नग्न वे ाधारी ' ांकर' भी एक ही व्यक्तित्व के दो अलग–2 नाम हैं जिसकी साकारी सम्पूर्ण अवस्था की यादगार तपस्वी मूर्ति दिलवाड़ा मंदिर में स्थापित है। महान वीरता के कर्तव्य के आधार पर मु.ता. 8.1.74 एवं 11.1.69, पृ.1 के मध्य में उनका अलौकिक नाम 'महावीर' ही रखा है। ''हनुमान का भी दृश्टांत है न। इसलिए तुम्हारा महावीर (तीर्थंकर) नाम रखा है। अभी तो एक भी महावीर नहीं ...अभी वीर हैं। पूरा महावीर पिछाड़ी में होंगे।''

c) lkseukFk– सोम चंद्रमा को कहते हैं। ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा को ज्ञान यज्ञ में नाथने वाली, यज्ञ के आदि में ब्रह्मा के साक्षात्कारों का रहस्य बताने वाली प्रजापिता की आत्मा ही अपने वर्तमान पुनर्जन्म में सोमनाथ बनती है। योगबल से बनने वाली इनकी निरोगी कंचन काया की यादगार में आज भी मंदिरों में मूर्तियों को सजाने का उल्लेख करते हुए बाबा ने मु.ता. 5.7.75, पृ.1 के मध्य में कहा है, ''सोमनाथ का मंदिर कितना बड़ा है। कितना सजाते हैं। ...आत्मा की सजावट नहीं है वैसे परमआत्मा (परमात्मा) की भी सजावट नहीं है। वह भी बिंदी है। बाकी जो भी सजावट है वह भारीरों की है। ...अभी तुम (बच्चे) अंदर में जानते हो हम सोमनाथ बन रहे हैं।'' (यहाँ ब्रह्मा बाबा के भारीर रूपी रथ की सजावट की बात नहीं है; क्योंकि वे भारीर रहते जीते जी अपनी सम्पूर्ण निरोगी कंचन काया नहीं बना सके)।

ii) cki dk vfr lk/kkj.k :lk– राम की आत्मा जिसके द्वारा ि ावबाबा पिता का पार्ट बजाते हैं वह यज्ञ के आदि में भी साधारण व्यक्तित्व वाला था और अभी अंत में भी ऐसे ही है। मुरलियों से यह बात सिद्ध होती है। मु.ता. 5.2.74, पृ.2 के आदि में बोला है,''इनका तो 'वही' साधारण रूप है, 'वही' ड्रेस आदि है। फर्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते।''(वही माने यज्ञ के आदि वाला)

m ''वह है निराकारी, निरअहंकारी, कोई अहंकार नहीं। कपड़े आदि सब वही हैं। कुछ भी बदला नहीं है। ...इनका तो वही साधारण तन, साधारण पहरवाइस है। कोई फर्क नहीं। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन लेता हूँ।'' -मु.ता. 8.4.74, पृ.1 अन्त (ि ावबाबा ब्रह्मा तन से यह मुरली चला

रहे हैं। फिर 'वह' और 'इनका' यह किसकी तरफ इ ारा किया है? जरूर यह दूसरी मूर्ति भांकर की तरफ इ ारा किया है)।

m ''बाप कहते हैं मैं बहुत साधारण तन में आता हूँ। इसलिए कोई विरला पहचानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ साथ में रहने वाले भी समझ नहीं सकते।'' -मु.ता.4.2.74, पृ.3 अन्त। ब्रह्मा बाबा का तन तो साधारण नहीं था और उनके साथ में रहने वाले भी उन्हें अच्छी तरह से पहचानते थे कि ये ब्रह्मा है। फिर यह महावाक्य किसके ऊपर लागू होता है? जरूर भांकर के ऊपर; क्योंकि उनके लिए ही मु.ता. 14.5.90, पृ.2 के आदि में बोला है, '' ंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वंडरफुल है जो तुम वि वास कर न सको।''

m''वही महाभारत लड़ाई है तो जरूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में है वह सिवाए तुम बच्चों के किसको पता नहीं है। कहते भी हैं मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण (अर्थात् ब्रह्मा के असाधारण) तन में नहीं आता हूँ।'' -मु.ता. 13.8.76, पृ.3 अन्त

iii) n'k

a) ykfdd tUeLFkku– बाबा ने ब्राह्मणों का दो प्रकार का जन्म बताया है– एक लौकिक जन्म तथा दूसरा अलौकिक जन्म। तो पहले परमात्मा के उस साकार पार्ट के लौकिक जन्म के संबंध में ता.14.1.73 व 12.1.78 की मु. में बोला है, ''जैसे फर्रूखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं; परन्तु वास्तव में वि व का वा सृष्टि का मालिक तो ल.ना. बनते हैं, निराकार ि ावबाबा तो वि व का मालिक बनते नहीं। तो उनसे पूछना पड़े कि वह मालिक निराकार है वा साकार है? निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके।'' विचार करने की बात यह है कि बाबा ने इतने बड़े भारत दे ा में जहाँ अनेकों जिले हैं वहाँ केवल फर्रुखाबाद जिले का ही नाम मुरलियों में क्यों लिया है? क्या सिर्फ फर्रुखाबाद के ही लोग मालिक को मानते हैं और दुनियाँ में कोई मालिक को नहीं मानता? यहाँ विचारणीय बात यह भी है कि बाबा ने 'भगवान' को मानने की बात नहीं कही बल्कि 'मालिक' को मानने की बात कही है। इसलिए बाबा ने मुरली में प्र न किया है 'निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके तो उनसे पूछना पड़े कि वह मालिक साकार है व निराकार?' स्पश्ट है कि मालिक से मतलब ज्योतिबिंदु ि ाव बाप से नहीं है बल्कि कोई साकार व्यक्तित्व है जो वि व का मालिक बनता है और वह फर्रुखाबाद जिले का रहने वाला ही होगा। इसलिए अनेकों मुरलियों में बाबा ने फर्रुखाबाद का नाम लिया है। जैसे,

m ''बाप कहते हैं मैं भी मगध दे ा में आता हूँ।''-मु.ता. 17.8.71, पृ.2 अन्त व 8.6.75, पृ.3 अन्त/4.9.99, पृ.3 मध्य (मगध दे ा कहा जाता है गंगा–यमुना के बीच के प्रदे ा को जो कि यू.पी. में है, सिंध हैदराबाद में नहीं।)

m ''सभी बच्चों पर मालिक को ही तरस पड़ेगा। बहुत हैं जो सृष्टि के मालिक को मानते हैं; परंतु वह कौन है? उनसे क्या मिलता है? वह कुछ पता नहीं हैं। फर्रुखाबाद में सिर्फ मालिक को मानते हैं। समझते हैं वह मालिक ही हमारा सब कुछ है।''

-मु.ता. 22.2.78, पृ.1 मध्य

m ''जैसे फर्रुखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं; परंतु वास्तव में वि व का वा सृष्टि का मालिक तो लक्ष्मी–नारायण बनते हैं।'' -मु.ता. 12.1.78, पृ.2 अन्त

m ''फर्रुखाबाद में तो मालिक को मानते हैं न। तुमने मालिक का भी अर्थ समझा है। वह है मालिक हम उनके बच्चे हैं। तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए न।'' -मु.ता. 7.12.73/20.11.88, पृ. 2 मध्य

m ''जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। अनेक मत तो है ना। अच्छा, उस मालिक से फिर क्या मिलेगा? कुछ भी पता नहीं। मालिक को कैसे याद करें? उनका नाम, रूप क्या है? कुछ पता नहीं है। मालिक तो सृष्टि का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता, हम हुये रचना।'' -मु.ता. 22.1.72/22.1.87, पृ.1 आदि

m ''फर्रुखाबाद में बच्चियां तो हैं; परंतु अजुन इतनी ताकत नहीं। वहाँ मालिक को मानने वाले हैं तो समझाना चाहिए। तुम कहते हो वह मालिक है। बाप फिर कहते हैं तुम मालिक हो। -मु.ता. 22.1.72, पृ.3 आदि/22.1.87, पृ.2 अंत

m ''फर्रुखाबाद में सिर्फ मालिक को मानते हैं। ...ऐसे तो नहीं मालिक से हमको दुःख मिला है। याद करते ही हैं उनको सुख– ांति के लिए।'' -मु.ता. 22.2.78, पृ.1 मध्य

m ''बंदरों की महफिल में मैं आता हूँ। मैं देवताओं की महफिल में कब आता ही नहीं हूँ। जहाँ माल मिलता, 36 प्रकार के भोजन मिल सकते वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ रोटी भी नहीं मिलती बच्चों को, उन्हों को आए, गोद में लेकर बच्चा बनाए गोद में लेता हूँ। साहुकारों को गोद में नहीं लेता हूँ।'' -मु.ता. 15.8.76, पृ.3 मध्य/2.9.86, पृ.3 आदि (विचार करें क्या यह महावाक्य माउंट आबू पर लागू होता है?)।

m ''ज्ञान सागर को कोई महल तो नहीं है। झोपड़ी है, ज्ञान सागर झोपड़ी में रहना पसंद करते हैं।'' -मु.ता. 15.9.78, पृ.1 आदि/16.9.98, पृ.1 मध्य (झोपड़ी भी असली होनी चाहिए। माउंट आबू में बनी हुई बनावटी झोपड़ी की तरह नहीं)।

m ''इतना ऊँच ते ऊँच बाप कैसे छी–2 गाँव में आते हैं। बच्चों को बहुत प्यार से समझाते हैं।''-मु.ता. 6.7.84, पृ.2 अन्त (उक्त गंदा गाँव माउंट आबू में तो कहीं देखने में नहीं आता। हाँ, यदि फर्रुखाबाद की तरफ चाहे तो देख सकते हैं)।

m ''समझाते भी उनको हैं जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं। उनके गाँव में आते हैं।'' -मु.ता. 30.6.76, पृ.2 (ब्रह्मा बाबा के तन में ि ावबाबा की प्रवे ाता कराची में होना सिद्ध होती है। कराची व माउंट आबू को गाँव नहीं कहा जा सकता। फिर वह गाँव कहाँ है तथा कौन सा है? तो वह गाँव जरूर फर्रुखाबाद की तरफ कोई प्राचीन व ऐतिहासिक गाँव होना चाहिए)।

m ''जब गोरा है तो ताज होना चाहिए और साँवरा है तो ताज कहाँ से आवेगा? उसको कहा जाता हैं गाँवरे का छोरा तो ताज कहाँ से हो सकता? गाँव का छोरा तो गरीब होगा ना।'' -मु.ता. 8.2.75, पृ.2 मध्य (ब्रह्मा बाबा में जब ि ावबाबा की प्रवे ाता हुई तब वे गरीब नहीं थे बल्कि हीरे–जवाहरातों के बहुत बड़े व्यापारी थे।)

m ''बाबा इतना अंग्रेजी नहीं पढ़ा हुआ है। तुम कहेंगे बाबा अंग्रेजी नहीं जानते। बाबा कहते वाह मैं कहाँ तक सब भाशायें बैठ सीखूँगा? मुख्य है ही हिंदी। तो मैं हिंदी में ही मुरली चलाता हूँ। जिसका भारीर धारण किया है वह भी तो हिंदी ही जानता है।'' -मु.ता. 26.11.73, पृ.2 मध्य (ब्रह्मा बाबा की मातृभाशा तो सिंधी थी जबकि ि ावबाबा बाप के रूप में जिस तन से वि व के आगे प्रत्यक्ष होते हैं उसकी मातृभाशा हिंदी ही है)।

m ''सोमनाथ मंदिर में बैठने वाला ि ावबाबा आज कहाँ पढ़ा रहे हैं? भक्तिमार्ग में उनको हीरों, जवाहरों के महल दे दिये हैं। कितना मान है। यहाँ इनको पहचानते नहीं तो पूरा रिगार्ड भी नहीं रखते। राजऋशि भारत को स्वर्ग बनाने वाले पढ़ाते देखो कितना साधारण है। जैसे गरीबों का सतसंग होता है। साहुकारों के तो बड़े–2 हाल होते हैं। यहाँ देखो कैसे पढ़ते हैं।'' -मु.ता. 12.3.78, पृ.3 अन्त (माउंट आबू में भी जहाँ सतसंग होता है वहाँ भी बड़े–2 हाल हैं)।

m ''जहाँ बाप का जन्म होता है वह भूमि सबसे ऊँच (सब तीर्थों का भानजा कम्पिला) तीर्थ है।'' -मु.ता. 10.11.77, पृ.2 अन्त

m ''यह घर का घर भी है और यूनिवर्सिटी भी है। इसको ही गॉड फादरली यूनिवर्सिटी कहा जाता है; क्योंकि सारी दुनियाँ के मनुश्य मात्र की सदगति होती है। रीयल वर्ल्ड यूनिवर्सिटी यह है। घर का घर भी है। माता–पिता के सन्मुख बैठे हो। ...स्प्रीचुअल नालेज सिवाए स्प्रीचुअल फादर के और कोई भी मनुश्य दे नहीं सकता।'' -मु.ता. 18.8.76, पृ.1 आदि

m ''यह वंडरफुल वि वविद्यालय है। देखने में घर भी है; लेकिन बाप ही सतशि ाक्षक है। घर भी है और विद्यालय भी है। इसलिए कई लोग समझ नहीं सकते हैं कि यह घर है या विद्यालय है; लेकिन घर भी है और विद्यालय भी है; क्योंकि जो सबसे श्रेश्ठ पाठ है वह पढ़ाया जाता

है।'' अ.वा.ता. 22.4.84, पृ.265 आदि (ऐसा वंडरफुल वि वविद्यालय जिसे देखकर लोगों को सं ाय हो कि यह घर है अथवा विद्यालय है। माउंट आबू में तो ऐसा वंडरफुल वि व विद्यालय कहीं है नहीं; क्योंकि वहाँ जाने वाले पहले से ही यह नि चय करके जाते हैं कि वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ई वरीय वि व विद्यालय में जा रहे हैं। फिर सं ाय की तो बात हो ही नहीं सकती। तो ऐसा वंडरफुल वि वविद्यालय फर्रुखाबाद जिले के उस प्राचीन गाँव [कम्पिला] में है जहाँ वंडरफुल पार्टधारी भांकर ने 'काम–पी–लिया' याने काम विकार पर जीत पाई।')

m ''यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। गुप्त वे ा में काम चलता रहेगा।'' -मु.ता. 11.1.78 / 10.1.93, पृ.1 अन्त (माउंट आबू में तो दिनप्रतिदिन भीड़ बढ़ती जा रही है)।

b) vyk‍fdd tUe LFkku& बाबा ने मुरलियों में बोला है भक्तिमार्ग में जो ड्रामा चलता है उसकी रिहर्सल संगमयुग पर होती है। भक्तिमार्ग में द्वापर के आदि में सोमनाथ मंदिर की स्थापना राजा विक्रमादित्य के द्वारा होती है। उसकी रिहर्सल/भाूटिंग संगमयुग पर राजा विक्रमादित्य (की आत्मा ब्रह्मा) करते हैं। ब्रह्मा बाबा के द्वारा (द्वापरयुग की भाूटिंग के) अपने जीवनकाल में यज्ञ के पैसों से एक भव्य सेवाकेंद्र खोला गया। वह सेवाकेंद्र था अहमदाबाद का 'हे प्रभु पार करो' की यादगार 'प्रभु–पार्क' में स्थित पालड़ी सेवाकेंद्र। वही सागर के कंठे पर भक्तिमार्ग का सोमनाथ मंदिर साबित होता है। ज्ञान सागर मधुबन (माउंट आबू) और उसका कण्ठा (किनारा) अहमदाबाद का उक्त पालड़ी सेवा केंद्र जो उस समय का सबसे नजदीकी सेवाकेंद्र था। बाबा ने मुरलियों में बोला है कि ''जिसका मंदिर बनाते हैं जरूर उससे कुछ प्राप्ति होती है।'' यहाँ भी बाबा ने सोमनाथ मंदिर रूपी सेवाकेंद्र बनाया तो जरूर उक्त व्यक्तित्व सोमनाथ से ही उन्हें सभी कुछ प्राप्ति हुई है। मु.ता. 4.3.75, पृ.2 के आदि में बोला है, ''सोमनाथ नाम रखा है; क्योंकि सोमरस पिलाते हैं, ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना खर्चा करते हैं उनका मंदिर बनाने पर; क्योंकि सोमरस दिया है ना। सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।'' यज्ञ के आदि में ब्रह्मा को अपने भागीदार सेवकराम (सोमनाथ) से यज्ञ की सारी जिम्मेवारी (बाद ाही) मिली। मु.ता. 25.4.90, पृ.2 के मध्य में बोला है, ''अलफ बिगर काम कैसे चलेगा। एक अलफ का पता नहीं बाकी तो बिंदी, बिंदी हो जाती। अलफ के साथ बिंदी देने से फायदा होता है।'' मुरलियों में कई बार अलफ और बे का जिकर आया है। तो अलफ कौन व बे कौन?

'अलफ को मिला अल्लाह बे को मिली बाद ाही।' 'अलफ' अर्थात् ब्रह्मा बाबा का वह पार्टनर जिसमें ि ावबाबा ने पहले प्रवे ा किया और ब्रह्मा के साक्षात्कारों का रहस्य खोला। सो उसे तो अल्लाह मिल गया और ब्रह्मा बाबा को यज्ञ के कारोबार के रूप में 'बे' बाद ाही मिल गई (नोट– विस्तृत जानकारी के लिए सीढ़ी व लक्ष्मी–नारायण का एडवांस कोर्स समझें)। चूंकि सम्पूर्ण मनुश्य सृष्टि के बीजरूप रचयिता बाप प्रजापिता की आत्मा भांकर का अलौकिक जन्म अहमदाबाद के उक्त पालड़ी सेवाकेंद्र में हुआ है। इसलिए अव्यक्त बापदादा ने अहमदाबाद को सर्व सेंटर्स का बीजरूप कहा है। अ.वा.ता. 24.1.70, पृ.190 की मध्य में बोला है, ''अहमदाबाद को सभी से ज्यादा सर्विस करनी है; क्योंकि अहमदाबाद सभी सेंटर्स का बीजरूप है।'' मु.ता. 4.3.75, पृ.2 मध्य में बाबा ने बोला है, ''सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।'' इसका मतलब बापदादा ने इ ारा दे दिया कि उक्त सेवाकेंद्र से दो मूर्तियां प्रत्यक्ष होती हैं जो अंत में सारे वि व को ज्ञानामृत व ज्ञानप्रका ा देने के निमित्त बनती हैं। इसलिए ता. 4.1.79, पृ.178 की अव्यक्तवाणी आदि में बापदादा ने कहा है, ''गुजरात को सैम्पुल तैयार करने चाहिए। ...गुजरात को लाइट हाउस बनाओ (जो) न सिर्फ गुजरात (का) लाइट हाउस हो बल्कि वि व लाइट हाउस।'' क्योंकि गुजरात की राजधानी अहमदाबाद को ही सारे वि व का लाइट हाउस बनना है इसलिए मु.ता. 5.3.75, पृ.3 के आदि में बाबा ने बोला है, ''अहमदाबाद में स्वामीनारायण के 108 मंदिर हैं। करोड़ों पैसे आते होंगे। मिलते तो स्वामीनारायण को होंगे ना। तो (अंत में अहमदाबादी पाण्डव भवन तैयार होने पर संगमयुगी वि व महाराजन श्री नारायण व उनके सहयोगी वि व विजेता 108 मणकों से कनेक ान जोड़ने के लिए) सभी सैन्टर्स से भी यहाँ ही

आवेंगे ना''। भक्तिमार्ग के जयगुरुदेव की यह भविश्यवाणी कि ''मध्य भारत के किसी भाहर से सारे वि व का भाासन सम्भाला जावेगा'' अहमदाबाद के सम्बंध में साबित होगी।

iv) dk;ldky– 100 वर्शीय पुरुशोत्तम संगमयुग में ज्ञान का बीज बोने और वि व की बाद ाही का वर्सा देने के लिए क्रम ाः आदि और अंत का कार्यकाल प्रजापिता (राम) की आत्मा के द्वारा चलता है। जबकि मध्य के 40 वर्श बड़ी माँ (ब्रह्मा) द्वारा ब्राह्मण धर्म की रचना व पालना का पार्ट चलता है। चूंकि प्रजापिता ब्रह्मा (राम बाप) की 100 वर्श आयु सन् 76 में पूरी हो जाती है तथा अमरनाथ महादेव भांकर के रूप में उनका नया पार्ट आरम्भ हो जाता है। तो सन् 76/77 से ब्राह्मणों को देवता बनाने वाली दूसरी म ीनरी का कार्य आरम्भ हो जाता है। यह कार्य भी सन् 2006/7 तक सम्पन्न हो जाता है। इसका संकेत बाबा ने अनेकों मुरलियों में दिया है। जैसे,

m ''50/60 वर्श लगते है पूरी राजधानी स्थापना में।''मु.ता. 24.7.72 तथा 25.7.75, पृ.2 आदि

m ''तुम्हारा यह (ज्ञान) यज्ञ 50 वर्श चलता है।'' -मु.ता. 11.5.73, पृ.2 मध्य

m ''50/60 वर्श की बड़ी ते बड़ी गवर्मेंट है।'' -मु.ता. 5.6.75

(अतः खास हम ब्राह्मणों को डायरैक्ट बाप के रूप में नम्बरवार वर्सा देने के लिए वि वनाथ भांकर का कार्यकाल सन् 76/77 से 2007 तक 30/33 वर्श का आंका जा सकता है)।

a) ykfdd 'kjhj dh vk;q– सोमनाथ–सोमनाथिनी के रूप में पार्ट बजाने वाली भांकर–पार्वती की आत्माओं की एक्युरेट पहचान के लिए बाबा ने मुरलियों में उनका नाम, रूप, दे ा, काल, यहाँ तक कि लौकिक भारीर की आयु भी बताई है। याने उन आत्माओं का पूरा हुलिया बता दिया। सिर्फ मुरलियों के उन महावाक्यों का अर्थ समझने की दरकार है। सन् 1965 में मम्मा के भारीर छोड़ने के प चात ब्रह्मा बाबा को यह महसूस हुआ कि यज्ञ में तो बिच्छु–टिंडन जैसे बच्चे घुसकर बैठ गये हैं। श्रेश्ठ बच्चे तो वही थे जो कि यज्ञ के आदि में ब्रह्मा बाबा को डायरैक ान देते थे। बाबा को उन बच्चों की बार2 स्मृति आने लगी। इसलिए सन् 1965 के बाद की मुरलियों में बाबा ने बोला कि ''बाप तो अनन्य (अन्+अन्य) अर्थात् उन जैसा अन्य कोई सैम्पल न हो ऐसे बच्चों को ही याद करेंगे। सबको तो याद नहीं करेंगे।'' उन्हीं अनन्य बच्चों के पुनर्जन्म के वर्तमान भारीर की आयु का उल्लेख करते हुए बाबा ने .मु.ता. 17.2. 75/16.2.80, पृ.1 के अन्त में कहा है, ''आगे जो मरे हैं फिर भी बड़े हो कोई 20, कोई 25 वर्श के हो गये होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं।''(सन् 1967 में चलाई हुई इस वाणी के अनुसार उस समय 20 और 25 वर्श वाली एडवांस पार्टी की आत्माएं याने पार्वती और भांकर का भाारीरिक जन्म क्रम ाः सन् 1946/47 व सन् 1941/42 में होना चाहिए)।

b) vykfdd vk;q– रंगमंच कभी हीरो–हीरोइन के बिना खाली नहीं रहता। याने ब्रह्मा–सरस्वती की आत्माएं अपना साकार भारीर छोड़ती हैं तो संगमयुगी दुनियाँ के रंगमंच पर पार्वती– ंकर की आत्माएं क्रम ाः सन् 1966/67 व सन् 1969/70 में उपस्थित हो जाती हैं। इस तरह मुरलियों के महावाक्यों के अनुसार भांकर–पार्वती की ज्ञान गर्भावस्था सहित अलौकिक आयु क्रम ाः 10 और 12 वर्श नि चत होती है। मु.ता. 17.7.74, पृ.1 के मध्य में बाबा ने बोला है, ''(बेहद के चतुर्भुजी सम्पूर्ण) बाप समझाते हैं ब्रह्मा की आयु 100 (=10 वर्श) वर्श। मैं इनकी वानप्रस्थ अवस्था (60 वर्श) में प्रवे ा करता हूँ। बहुत जन्मों के अन्त के जन्म के भी अन्त में।'' मु.ता. 19.8.74, पृ.3 के आदि में बोला है, ''(बेहद के ज्ञान) गर्भ में भी 5/6 मास बाद (अर्थात् 5/6 वर्श अर्थात् सन् 1970 से 75तक ज्ञान गर्भ में) आत्मा प्रवे ा करती है तब चुर्र–पुर्र (अर्थात् हरकत) होती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है।'' ब्रह्मा–सरस्वती व भांकर–पार्वती ही बुद्धियोग से परस्पर जुड़े होने के कारण बेहद के चतुर्भुजी सम्पूर्ण ब्रह्मा हैं। इनकी बेहद की कुल अलौकिक आयु सन् 70 से 76 तक 6 वर्श है। 'आदि सनातन देवी–देवता धर्म' के धर्म स्थापक ब्रह्मा के ज्येश्ठ पुत्र योगी वर सनतकुमार (महादेव भांकर) की अलौकिक आयु 6 वर्श सन् 76 में जब पूर्ण होती है तब रुहानी बाप ि ाव की उनमें प्रवे ाता साबित होती है; क्योंकि सन् 1976 से ही त्रिनेत्री, त्रिमूर्ति ि ावबाबा का सत िक्षक/सतबाप व सतगुरू का

पार्ट आरम्भ हो जाता है। उनके द्वारा एडवांस ज्ञान के रूप में मुरलियों के गुह्य राज खुलने आरम्भ होते हैं। इसलिए बोला है, ''मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान हैं? जब नालेज देते हैं।''(मु.ता. 27.10.74, पृ.2 आदि/26.10.99, पृ.2 अंत)।

तो बाप के इस करावनहार गुप्त पार्ट को ज्ञानी तू आत्मा ब्राह्मण बच्चे तो नम्बरवार ज्ञान के आधार पर पहचान लेते हैं; किंतु वे बच्चे जो मुरलियों पर श्रद्धा, वि वास व भावना नहीं रखते, ज्ञान को अपने जीवन में धारण नहीं करते वे बाप के इस साधारण विचित्र पार्ट को पहचान नहीं पाते और देहभान में आकर, अहंकार व । उनकी ग्लानी करने लगते हैं, कलंक लगाते हैं; लेकिन ग्लानी का गरल (विश) पीने वाला, कलंक के ऊपर कलंक धारण करने वाला, निरअहंकारी, निर्विकारी बाप जिसे मुरली में बाबा ने 'मस्त कलंकीधर फकीर' की उपाधि दी है, वह अंत तक दुनियाँ की निगाहों से गुप्त रहकर पार्ट बजाता है। सारी दुनियाँ चाहे विरोध करे, दु मन बन जावे पर वह अपने नि चय पर, अपनी स्टेज पर ध्रुव तारे की तरह अटल, अडोल रहता है। इसलिए अ.वा.ता. 9.4.73, पृ.19 के अन्त में बापदादा ने बोला है, ''स्थापना के आदि समय तो सारी दुनियाँ एक तरफ और एक आत्मा दूसरी तरफ थी।''ता.18.10.72पृ.3 की मु. में बोला है– ''जैसे2 आदि में हुआ वैसे अंत में होगा।'' बाबा ने बोला भी है, ''सारी (लौकिक–अलौकिक) दुनियाँ दु मन बनेगी; परंतु बाप को न भूलना।'' तो कलियुग के अंत में प्रत्यक्ष होने वाला ऐसा वि व विजयी कलंकी अवतार कोई ब्रह्मा बाबा का स्वरूप नहीं है; क्योंकि उनके ऊपर भल अज्ञानी लोगों ने लौकिक दुनियाँ वालों ने कलंक लगाये; परंतु ब्राह्मणों की अलौकिक दुनियाँ वालों ने उनका विरोध नहीं किया, उनके ऊपर कलंक नहीं लगाये और वे तो अपना साकार स्वरूप छोड़ अव्यक्त हो गये। जबकि भांकर के नाम–रूप से ब्राह्मणों की दुनियाँ में प्रत्यक्ष होने वाला व्यक्तित्व ही वास्तव में सब के विरोध का, सबकी ग्लानी का, कलंक रूपी विशपान करने के बावजूद भी अपने योगबल की पावर से वि व की बाद ाही अपने हाथ में लेने वाला वि वनाथ कहलाता है। संगमयुग पर ही डायरैक्ट नर से नारायण डबल सिरताज बनता है। तभी मु.ता. 9.7.73, पृ.5 के मध्य में बाबा ने बोला है, ''कलंक जिस पर लगते हैं वही फिर कलंकीधर डबल सिरताज बनते हैं।'' सतगुरू अकालमूर्त के रूप में पार्ट बजाने वाला परमात्मा बाप का यह गुप्त रूप लास्ट विना ा के पीरियड में दुनियाँ के सामने प्रत्यक्ष हो जावेगा। तब सारा वि व उन्हें गॉडफादर (वि वपिता) के रूप में महसूस करेगा, स्वीकार करेगा।

v-ok- e cki d orekudkyhu ifDVdy ikV dh igpku

m ''व्यक्त में अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा है। पहले भी निमित्त ही थे अब भी निमित्त हैं। यह पूरा परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेश्ठ है। अव्यक्त में तो है ही। ...साकार अकेला नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है।'' -अ.वा. 18.1.70, पृ.166 अन्त

m ''ब्राह्मण बच्चों के साथ जो बाप का वायदा है कि साथ चलेंगे, साथ मरेंगे और साथ जियेंगे अर्थात् पार्ट समाप्त करेंगे। ...वह आधे में छोड़ सकते हैं क्या? स्थापना के कार्य में निमित्त बनी हुई नींव बीच से निकल सकती है क्या?'' -अ.वा. 30.6.74, पृ.84 अन्त

m ''ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूंधा हुआ है।'' -अ.वा.30.6.74पृ.83 मध्य

m ''साकार स्नेह के रिटर्न में साकार रूप है।'' -अ.वा. 18.1.79, पृ.229 मध्य

m ''दुनियाँ वाले समझते हैं बाप चले गये और बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहे तब मिलन मना सकते। (ब्राह्मणों की) दुनियाँ वालों की आंखों के आगे (अज्ञानता का) पर्दा आ गया।'' -अ.वा. 18.1.79, पृ.231 आदि

m ''वर्तमान को भूल बीती को याद करते हैं। इस कारण बापदादा कब प्रत्यक्ष दिखाई देते, कब पर्दे के अंदर छिपा हुआ दिखाई देते; लेकिन बापदादा सदा (ज्ञानी तू आत्मा) बच्चों के आगे प्रत्यक्ष है। बच्चों से छिप नहीं सकता।'' -अ.वा. 18.1.78, पृ.34 अन्त

m ''जैसे स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला वि ोश रही ऐसे अंत में भी यही विचित्र लीला प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेगी। चारों ओर से 'यही है, यही है' यह आवाज़ गूंजेगी।'' -अ.वा. 31.12.82, पृ.22 मध्य ('यही ह' का इ ारा साकार की तरफ संकेत का सूचक है)।

m ''कोई है यह तो सब समझते हैं; लेकिन 'यही है और यह एक ही है' यह हलचल का हल नहीं चला है।'' -अ.वा. 5.12.84, पृ.50 अन्त

m ''बाबा चला गया' यह कह अविना ी (साकार) सम्बंधों को विना ी क्यों बनाते हो? सिर्फ पार्ट (ब्रह्मा से भांकर रूप में) परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी (स्थूल में) सेवा स्थान चेंज करते हो ना। तो ब्रह्मा बाप ने भी (स्थूल में) सेवा स्थान चेंज किया है।'' -अ.वा. 18.1.78, पृ.35 आदि

m ''अब तो जब आप समय परिवर्तन की सूचना दे रहे हो तो बापदादा के मिलने का (पार्ट, समय व स्थान) भी परिवर्तन होगा ना। -अ.वा. 15.2.83, पृ.64 अन्त

m ''जैसे साकार में याद है ना हर ग्रुप को वि ोश स्नेह के स्वरूप से अपने हाथों से (ब्रह्मा–बाबा) खिलाते थे और बहलाते थे। वही स्नेह का संस्कार अब भी प्रैक्टिकल में (ि ाव– ांकर द्वारा) चल रहा है।'' -अ.वा. 6.1.83, पृ.32 मध्य

m ''साकार में सर्व आत्माओं की नज़र इस महान स्थान पर ही जा रही है और जाएगी। ...ऐसे ही यह आध्यात्मिक खजानों की प्राप्ति का स्थान जो अभी गुप्त है इसको अनुभव के नेत्र द्वारा देख ऐसे ही समझेंगे जैसे गंवाया हुआ, खोया हुआ गुप्त खजाने का स्थान फिर से मिल गया है। धीरे–2 सबके मन से, मुख से यही बोल निकलेंगे कि ऐसे कोने में इतना श्रेश्ठ प्राप्ति का स्थान। इसको तो खूब प्रसिद्ध करो। तो विचित्र बाप, विचित्र लीला और विचित्र स्थान यही देख–2 हर्शित होंगे।'' -अ.वा. 26.1.83, पृ. 57 आदि, अन्त

m ''साकारी सृष्टि में साकारी रूप से मिलन–मेला मनाने की विधि वृद्धि के साथ–2 परिवर्तन तो होगी ना।'' -अ.वा. 5.4.83, पृ.118 मध्य

m ''संगम पर बापदादा सदा आपके साथ हैं; क्योंकि अभी ही बाप बच्चों के आगे हाजिर–नाजिर होते हैं।'' -अ.वा. 10.1.82, पृ.232 अन्त

m ''बीज के साथ–2 वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त श्रेश्ठ आत्मायें हो। तो बापदादा ऐसी श्रेश्ठ आत्माओं से मिलन मनाने के लिए आते हैं। ऐसी श्रेश्ठ आत्मायें हो जो निराकार और साकार को भी आप समान साकार रूप में लाते हो।'' -अ.वा. 12.1.82, पृ.233 अन्त

m ''अब ऐसा समय आयेगा जो सभी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च आदि से सबसे मिलकर एक ही आवाज होगी कि 'हमारा बाबा आ गया है।' ...सबकी नज़र आप ऐन्जिल्स और बाप की तरफ होगी।'' -अ.वा. 16.1.82, पृ.251 आदि

m ''जब तक 'यह (जो) नया ज्ञान है' यह प्रत्यक्ष नहीं हुआ है तो ज्ञान दाता कैसे प्रत्यक्ष हो? पहले ज्ञान आता है, फिर दाता आता है। तो ज्ञान दाता ऊँचे ते ऊँचा है। या एक ही वह ज्ञान दाता है यह सिद्ध कैसे होगा? इस नये ज्ञान से ही सिद्ध होगा।'' -अ.वा. 1.6.83, पृ.235 आदि

m ''संगमयुग की वि ोशता है कि इस युग में ही बाप भी प्रत्यक्ष होते हैं, ऊँच ते ऊँच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होते हैं। आप सबके 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती है।'' -अ.वा. 10.9.75, पृ.103 मध्य

m ''यह ि ावरात्री प्रत्यक्षता की ि ावरात्री करके मनाओ। सबका अटें ान जाए (कि) यह कौन है? किसके प्रति सम्बंध जोड़ने वाले हैं? सब अनुभव करें कि जो आव यकता है वह यहाँ से ही मिल सकती है। सब सुखों के खान की चाबी यहाँ ही मिलेगी।'' -अ.वा. 3.2.79, पृ.267 मध्य

m ''सबसे बड़े ते बड़ा संगमयुग का फल है जो स्वयं बाप प्रत्यक्ष रूप में मिलता।परमात्मा भी साकार रूप में साकार मनुश्य रूप में मिलने आता। इस फल में और सब फल आ जाते ।'' -अ.वा.31.5.77, पृ. 202 अन्त

m ''हजार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है। तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएं बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकती।भुजाएं बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं।कराने वाला है तब तो कर रहे हैं।'' -अ.वा.18.1.78, पृ.35 मध्य

m ''लास्ट बाम्ब अर्थात् परमात्मा बाम्ब है बाप की प्रत्यक्षता का। जो देखे, जो सम्पर्क में आकर सुने उन्हीं द्वारा यह आवाज़ निकले कि बाप आ गए हैं। डायरैक्ट आलमाइटी अथार्टी का कर्तव्य चल रहा है। यह अंतिम बाम्ब है जिससे चारों ओर से आवाज निकलेगा।'' -अ.वा. 28.12.78, पृ.159 आदि

m ''कुछ समय गुप्त को भी देखना पड़ता है। छिपे हुए को प्रत्यक्ष होने में कुछ समय लगता है। '' -अ. वा. 3.8.75, पृ.79 अन्त

m ''बुलन्द आवाज़ करने के लिए चारों ओर से एक आवाज़ निकले कि हमारा बाप गुप्त वे ा में आ गया है। जैसे बाप ने आप बच्चों को गुप्त से प्रत्यक्ष किया वैसे आप सबको फिर (बाद में) बाप को प्रत्यक्ष करना है।'' -अ.वा. 8.1.79, पृ.193 अन्त

m ''जो बाप बैकबोन है गुप्त रूप में पार्ट बजा रहे हैं, बाप को प्रत्यक्ष करना है। सुनाने वालों को पहचानते हैं; लेकिन बनाने वाला अभी भी गुप्त है तो अब बनाने वाले को प्रत्यक्ष करना अर्थात् विजय का झण्डा लहराना है।'' -अ.वा. 5.2.79, पृ.273 मध्य

m ''हरेक के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा। वि व में वि वपिता स्पश्ट दिखाई देगा। हर धर्म की आत्मा द्वारा एक ही बोल निकलेगा कि 'हमारा बाप' हिन्दुओं का, मुसलमानों का नहीं, सबका बाप। इसको कहा जाता है परमात्मा बाम्ब द्वारा अंतिम प्रत्यक्षता।'' -अ.वा. 28.12.78, पृ.161 अन्त

m ''संगमयुग पर तकदीर की रेखा परिवर्तन करने वाला बाप सन्मुख में पार्ट बजा रहे है।'' -अ. वा. 9.9.75, पृ.99 मध्य

m ''विधाता द्वारा अविना ी तकदीर की लकीर खिंचवा सकते हो; क्योंकि भाग्य विधाता दोनों बाप इस समय बच्चों के लिए हाजिर–नाजिर हैं।'' -अ.वा. 12.10.81, पृ.55 अन्त

m ''बाप सन्मुख आते और बच्चे अलमस्त होने के कारण देखते हुए भी नहीं देखते, सुनते हुए भी नहीं सुनते। ऐसा खेल अभी नहीं करना है।'' -अ.वा. 6.9.75, पृ.96 अन्त

m ''गॉड इज वन' यह गोल्डन एज्ड की स्मृति है। अनेकों में फंसना यह आइरन एज्ड है।'' -अ. वा. 23.1.79, पृ.239 अन्त

m ''जबकि बाप स्वयं बच्चों से सदा साथ रहने का वायदा कर रहे हैं और निभा भी रहे हैं तो वायदे का लाभ उठाना चाहिए।'' -अ.वा. 6.9.75, पृ.96 आदि

m ''आप श्रेश्ठ आत्माएं सन्मुख बाप की श्रीमत लेने वाली हो, प्रेरणा द्वारा व टचिंग द्वारा नहीं। मुख वं ावली हो। डायरैक्ट मुख द्वारा सुनते हो।''-अ.वा. 24.5.77, पृ.170 आदि

m ''सिर्फ संदे ा देना तो चींटी मार्ग की सर्विस है या विहंग मार्ग की सर्विस है? दुनियाँ के अंदर यह आवाज़ फैलाओ कि बापदादा अपने कर्तव्य को कैसे गुप्त वे ा में कर रहे हैं। उन्हीं को इस स्नेह सम्बंध में लाओ।'' -अ.वा. 28.11.69, पृ.150 मध्य

m ''बाप आते हैं तो बड़े–2 लोग महामूर्ख ही बन जाते हैं, जितने बड़े उतने ही मूर्ख बनते। जो बाप को ही नहीं जान सकते तो महामूर्ख हुए ना। ...यह भी अपनी कल्प पहले की महामूर्खता की यादगार मनाते हैं। सारा उल्टा कार्य करते हैं। बाप कहते हैं मेरे को जानो। वह कहते बाप है ही नहीं। तो उल्टे हुए ना। आप कहते हो बाप आया है, वह कहते हैं हो ही नहीं सकता। तो उल्टा कार्य करते हैं ना। ऐसे तो बहुत कुछ विस्तार कर लिया है; लेकिन सार है बाप और बच्चों के मंगल मिलन का यादगार।'' -अ.वा. 21.3.81, पृ.79 अन्त

m ''सन्मुख बाप और वर्से की प्राप्ति अभी है अथवा भविश्य में? श्रेश्ठ स्टेज अब है या भविश्य में? अभी श्रेश्ठ है ना। '' -अ.वा. 12.1.77, पृ.12 मध्य

m ''अब तक की रिजल्ट में राजयोगी आत्माएं श्रेश्ठ हैं, राजयोग श्रेश्ठ हैं, कर्तव्य श्रेश्ठ है, परिवर्तन श्रेश्ठ है। यह प्रत्यक्ष हुआ है; लेकिन सिखाने वाला डायरैक्ट आलमाइटी है। ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है। यह अभी गुप्त है।'' -अ.वा. 28.12.78, पृ.161 मध्य

m ''परमात्मा मिलन मनाने के ठेकेदारों से अब थक गये हैं, निरा ा हो गये हैं। समझते हैं सत्य कुछ और है। सत्यता की मंजिल की खोज में हैं।'' -अ.वा. 1.1.78

m ''हम इतनी श्रेश्ठ आत्मायें हैं जो स्वयं परम आत्मा बाप,   िाक्षक और सतगुरू बने हैं। इससे बड़ा भाग्य और किसी का हो सकता है? ऐसा भाग्य तो कभी सोचा भी नहीं होगा कि सर्वसम्बंधों से परम

आत्मा मिल जायेगा। यह असम्भव बात भी सम्भव साकार में हो रही है। तो कितना भाग्य है।'' -अ.वा. 3.12.79, पृ.81 आादि

m ''बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है, इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे। तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी।'' -अ.वा. 2.11.88, पृ. 118

m ''जैसे भारु में चलते–फिरते, देखते रहते थे। यह ध्यान में जाकर देखने की बात नहीं। जैसे एक साकार बाप का आदि में अनुभव किया वैसे अंत में अभी सबको साक्षात्कार होगा।'' -अ.वा. 10.12. 78, पृ.117 आदि

m ''जैसे भारू में घर बैठे आवाज आया, बुलावा हुआ कि आओ, पहुँचो, अभी निकलो और फौरन निकल पड़े। ऐसे ही अंत में भी बाप का आवाज पहुँचेगा।''-अ.वा. 6.3.85, पृ.214 मध्य

vke 'kkfrA